ओ३म् ॥

* वन्देमातरम *

जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी ।

सो नृप अवश नरक अधिकारी ॥

राजपूताना मध्यभारतसभा

के—

नियमोपनियम ।

A/P

प्रकाशकः—

कुँवर चांदकरण शारदा,

मन्त्री.

सं० १९७८ वि.,

वैदिक यन्त्रालय, अजमेर में मुद्रित ।

राजपूताना मध्यभारतसभा
के
नियम.

नाम।

इस संस्था का नाम "राजपूताना मध्यभारतसभा" होगा।

उद्देश।

(१) इस संस्था का उद्देश देशी राज्यों में नरेशों से प्रजा के प्रति उत्तरदायित्वपूर्ण शासन-पद्धति प्राप्त कराना है।

(२) राजा और प्रजा की शारीरिक मानसिक आर्थिक सामाजिक और नैतिक दशाओं का सुधारना।

साधन।

(१) कलाकौशल व व्यापार-सम्बन्धी पुस्तकें और समाचारपत्र छपवाना या उनके छपवाने में व प्रचार में सहायता देना।

(२) पुस्तकालय और वाचनालय स्थान २ पर खुलवाना।

(३) कलाकौशल की उन्नति के लिये अजायबघर, म्यूज़ियम व शोरूम (Show Room) खुलवाना।

(४) विद्याप्रचार के लिये पाठशालायें खुलवाना।

(५) कलाकौशल व्यापार–सम्बन्धी शिक्षा के लिये विद्यालय खुलवाने का विशेष प्रयत्न करना।

(६) स्थान २ पर उपदेशक भेजना, उनके व्याख्यानों का प्रबन्ध करना और ग्रामों में मेजिक-लेएटर्न द्वारा व्याख्यान देकर लोगों को शिक्षित करना तथा समाचारपत्र निकालना।

(७) लोगों की शारीरिक अवस्था ठीक करने के लिये खेल कूद, नानाप्रकार के व्यायाम व कसरतों की स्थान २ पर व्यायाम-शालायें खोलने का प्रबन्ध करना।

(८) कृषि विभाग की उन्नति के लिये उत्तम साधन बताना।

(९) स्वास्थ्यरक्षा और स्वच्छता के नियम बतलाना।

(१०) सुलभ रीति से साधारण चिकित्सा करना बतलाना।

(११) प्रजा के सेवार्थ हर जगह सेवा-समितियां स्थापित करना।

(१२) जनता के परस्पर वादविवाद मिटाने के लिये पंचायत द्वारा उचित न्याय करना।

सभा का प्रबन्ध।

इस सभा के साथ एक प्रबन्धकारिणी सभा रहेगी, प्रबन्धकारिणी सभा के सदस्य अधिक से अधिक ३० रहेंगे।

सभा के निम्नलिखित अधिकारी होंगे।

प्रधान, उपप्रधान, मंत्री, सहायक मंत्री, कोषाध्यक्ष, पुस्तकाध्यक्ष और निरीक्षक।

प्रधान के निम्नलिखित कार्य होंगे।

(१) वह प्रबन्धकारिणी सभा और सभा के सब अधिवेशनों का सभापति समझा जायगा।

(२) सदैव सभा के सब कार्यों का यथावत् प्रबन्ध करने में और सर्वथा सभा के उद्देश्यों की पूर्ति तथा सभा की उन्नति और रक्षा में तत्पर रहना होगा।

(३) सभा के प्रत्येक कार्य को देखेगा कि वे नियमानुकूल किये जाते हैं या नहीं और स्वयं को भी नियमानुसार चलना होगा।

(४) यदि कोई कार्य कठिन और आवश्यक प्रतीत हो तो उसका यथोचित प्रबन्ध उसी समय करे उसके बिगड़ने का उत्तरदाता वही होगा।

उपप्रधान।

उपप्रधान—प्रधान की अनुपस्थिति में उसका प्रतिनिधि होगा यदि ३ या अधिक उपप्रधान हों तो सभा की सम्मत्यनुसार उनमें से कोई एक बड़ा उपप्रधान किया जावेगा।

सभा के सब कामों में प्रधान को सहायता देना उसका मुख्य काम होगा, और उपप्रधान अपने अपने विभाग का प्रधान समझा जायगा। तीन उपप्रधानों के सुपुर्द विद्याविभाग, सेवाविभाग व राजनैतिक विभाग पृथक् २ दिया जायगा।

मन्त्री ।

मंत्री के निम्नलिखित कार्य्य और अधिकार होंगे ।

(१) सभा की ओर से सबके साथ पत्रव्यवहार रखना और सभा सम्बन्धी चिट्ठी और सब प्रकार के विशिष्ट पत्रों को संभाल कर रखना ।

(२) सभा की सभाओं का वृत्तान्त पुस्तक में लिखना ।

(३) सामन्य रीति से सभा के भृत्यों के कार्य पर दृष्टि रखना और सभा के नियम और व्यवस्थाओं के पालन पर ध्यान रखना ।

(४) प्रधान तथा प्रबन्धकारिणी सभा की आज्ञानुसार कार्य करना ।

(५) सभा के उद्देश्य पूर्ति के अर्थ किसी कार्य में १००) और प्रधान की आज्ञा से २००) तक व्यय करने का अधिकार होगा, विशेष धन की स्वीकारी प्रबन्धकारिणी से प्राप्त करनी होगी ।

उपमन्त्री ।

(१) मंत्री को सहायता देना और मंत्री की अनुपस्थिति में उसके सम्पूर्ण कार्य करना अपने २ विभागों का सब कार्य मंत्री, प्रधानकी अनुमति से करना ।

(२) सभा के सब आय व्यय को लिखना, उसकी रसीद देना और उसको यथोचित प्रबन्ध में रखना ।

(३) प्रबन्धकारिणी सभा की आज्ञा तथा नियमानुसार रुपये देना ।

(५) संपूर्ण धन के आयव्यय का रीतिपूर्वक बही खाता रखना और यथा समय प्रबन्धकारिणीसभा में हिसाब में बही खाते सहित परताल और स्वीकृति के लिये निवेदन करना।

(६) कोषाध्यक्ष कोई बैंक व साहूकार जिसको सभा चुने रहेगा और उससे मंत्री, प्रधान चेक द्वारा रुपया मंगावेगा।

पुस्तकाध्यक्ष।

पुस्तकाध्यक्ष के अधिकार और नियम निम्नलिखित होंगे।

(७) पुस्तकालय में जो सभा की स्थिर पुस्तकें और विक्रय पुस्तकें हों उन सब की रक्षा करना और पुस्तकालय-सम्बन्धी हिसाब रखना, पुस्तकों के लेने देने मंगवाने और बेचने का काम भी करना तथा प्रान्तभर के पुस्तकालयों का निरीक्षण करना।

प्रबन्धकारिणीसभा के विशेष नियम।

(१) जब वर्ष के पहले किसी सभासद् वा अधिकारी का स्थान रिक्त हो प्रबन्धकारिणीसभा स्वयं ही उसके स्थान पर किसी योग्य पुरुष को नियुक्त करेगी।

(२) प्रबन्धकारिणी सभा कोई सभासद् मंत्री को एक सप्ताह पहिले विज्ञापन देसक्ती है कि कोई विषय सभा में निवेदन कियाजावे और वह विषय प्रधान की आज्ञानुसार निवेदन किया जावेगा, परन्तु जिस विषय के निवेदन करने में

प्रबन्धकारिणी सभा के ३ सभासद् व जनरल सभा के ५ सभासद् सम्मति दें निवेदन अवश्य करना ही पड़ेगा।

(३) प्रबन्धकारिणीसभा की बैठक साधारणतया प्रतिमास हुआ करेगी और विशेष कारणों से बीच में भी होसकेगी।

(४) सभा के अधिकारी प्रबन्धकारिणी सभा के अधिकारी होंगे सभाकी कार्यवाही तृतीयांश संख्या के उपस्थित होने पर प्रारम्भ होगी।

(५) प्रबन्धकारिणीसभा किसी विशेष कारण से किसी सभासद् को सभा से पृथक् कर सकेगी यदि प्रबन्धकारिणीसभा के ३/४ सभासद् इससे सहमत हों।

वार्षिक साधारण सभा।

(१) यह सभा प्रतिवर्ष निम्नलिखित प्रयोजनों के लिये होगी।

(क) प्रबन्धकारिणी सभाके सभासद् व अधिकारी नियुक्त करने के लिये।

(ख) सभा का पिछला वृत्तान्त सुनाने के लिये व हिसाब व रिपोर्ट पास करने व सभा की उन्नति पर विचार करने के लिये।

(२) इस सभा के होनेका विज्ञापन एकमास पूर्व प्रकाशित किया जायगा।

नैमित्तिक सभा।

(१) यह सभा जब कभी आवश्यकता हो किसी विशेष कार्य के लिये निम्नलिखित दशाओं में की जायगी—

(क) जब प्रधान व मन्त्री चाहें।

(ख) जब प्रबन्धकारिणी सभा चाहे।

(ग) जब सभासदों का पंचम अंश लिख कर भेज देवे।

(घ) इस सभा के होने का विज्ञापन समयानुकूल दिया जावेगा।

जनरल सभा की प्रबन्धकारिणीसभा के कार्य।

इस सभा का मुख्य कार्य सभा के अधिवेशनों का करना और अधिवेशन में पास हुए हुए प्रस्तावों को कार्यरूप में परिणत करना। सभा के प्रबन्ध का काम तीन विभागों में बांटा जायगा। इन तीन विभागों के अलग अलग मंत्री होंगे और वे ही सभा के सहायक मन्त्री कहलायेंगे। १ राजनैतिक-विभाग, २ विद्याविभाग, ३ सेवा-विभाग।

राजनैतिक।

राजनैतिक विभाग के ५ सदस्यों की उपसभा होगी। इसके मंत्री के निम्नलिखित कार्य होंगे—

(१) राजा और प्रजा के सम्बन्ध के क़ानून नये बनाना या मौजूद क़ानूनों का सुधार करना।

(२) उन मुक़द्दमात की पैरवी करना, जो क़ौमी ख़िदमत करने वाले देशभक्तों पर अधिकारियों के अत्याचार के कारण चलाये जायं और देशभक्तों की हर प्रकार से सहायता का प्रबन्ध करना, लोगों के परस्पर के झगड़े तय कराने व पंचायतें खुलवाना, प्रजा को राजनैतिक अधिकार दिलाना

व राजाओं से उत्तरदायित्वपूर्ण शासन प्राप्त करने के लिये लिखा पढ़ी करना।

विद्या-विभाग।

विद्या-विभाग के मन्त्री को निम्नलिखित काम करना होगा—

(१) सभा से सम्बन्धित राजस्थान व मध्यभारत के ग़ैर सरकारी स्कूलों की फ़हरिस्त रखना और उनको हर प्रकार से सहायता देना तथा अपने इन्सपेक्टर द्वारा उनका निरीक्षण कराना।

(२) जहां २ आवश्यक्ता हो नई पाठशालायें खुलवाना, सब पाठशालाओं के लिये एक सी पाठ्यविधि तैयार करना।

(३) कृषिविभाग की उन्नति के लिये उत्तम साधन बताना तथा कृषिपाठशालायें खोलना कलाकौशल की और व्यापार की उन्नति के लिये हर प्रकार के उचित साधन काममें लाना, उद्योग हुनर की पाठशालायें खुलवाना और स्वदेशी का प्रचार करना व उपयोगी पुस्तकें छपवाना व समाचारपत्र निकालना व ट्रैक्ट इत्यादि बांटना।

सेवा विभाग।

इसके मंत्री को निम्नलिखित काम करना होगा—

(१) राजस्थान मध्यभारत की सेवासमितियों को एक संगठन में लाना और उनके एकसे नियम बनाना, जहां २ सेवासमितियें नहीं हैं वहां नई समितियें खुलवाना, मेलों, तमाशों, व्याख्यानों, जलसों, बीमारियों और महामारी आदि रोगों में

घ अचानक घटनाओं व दुर्भिक्ष के समय में लोगों की सहायता करना व लोगों के कष्ट दूर करने का प्रबन्ध करना जनताकी शारीरिक अवस्था को ठीक करने के लिये व्यायामशालाएं खुलवाना स्वास्थ्यरक्षा और स्वच्छता के नियम बतलाना।

सभासद् होने के नियम।

(१) इस सभा में प्रत्येक देशी राज्य का व ब्रिटिश भारत का १८ वर्ष से अधिक आयुवाला पुरुष व स्त्री इस संस्था का ।) वार्षिक देकर सदस्य होसका है यदि वह सभा के उद्देश्यों में सहानुभूति रखता हो और प्रतिज्ञापत्र पर दस्तखत करदें। सदस्य के निम्नलिखित कार्य होंगे—

(२) सभा के सुधार के सम्बन्ध में अपनी तजवीज वा रायें भेजना और सभा के उद्देश्यों को कार्य में परिणत करने के लिये सदा तत्पर रहना।

(३) सभाके साधारण व विशेष अधिवेशनों में उपस्थित होने के लिये प्रयत्नशील रहना।

(४) सभा से सम्बन्ध रखनेवाली संस्थाओं की सहायता करना।

सहायता इस प्रकार से होसक्ती है।

(१) रुपये से।

(२) जरूरी खबरें व स्थानिक हालात की सूचना सभा के दफ्तर को देते रहना।

(३) सभाके सदस्य बढ़ाने में सहायता देना।

(४) अपने नगर तथा आसपास के गांवों में वहीं की साधारण बोली में व्याख्यानों द्वारा तथा बातचीत में सभा की चर्चा करना, सभाकेन्द्र से प्रकाशित होनेवाले परचे, पुस्तकें व समाचारपत्रों के क्रय विक्रय तथा प्रचार का प्रबन्ध करना, नरेशों के पास प्रार्थनापत्र आदि भिजवाना, राजाकी ओर से

प्रजा को क्या कष्ट है इसकी सूचना प्रधान मंत्री को देना, अपने २ स्थान पर सभा को शाखायें स्थापित करना, सेवा-समिती खुलवाना, आपत्तिकाल में मनुष्यजाति की सेवा करना।

मिश्रित।

(१) राजस्थान मध्यभारत की प्रत्येक सार्वजनिक संस्था जिसः का उद्देश राजस्थान व मध्यभारत की सेवा करना व विद्या-प्रचार करना हो वह एकपत्र भेजकर अपनी संस्था का सम्बंध विना कुछ फीस दिये सभा के किसी विभाग से करसक्ती हैं।

(२) सब सभाओं और उपसभाओं का हिसाब व वृत्तान्त देव-नागरी लिपि में लिखा जाया करेगा उसको सब सभासद् देख सकेंगे।

(३) जब किसी सभा में थोड़े समय के लिये कोई अधिकारी उपस्थित न हो तो उसके स्थान पर उस समय के लिये प्रबन्धकारिणीसभा किसी योग्य सभासद् को नियुक्त कर-सक्ती है।

(४) रियासतों से सम्बन्ध रखनेवाले किसी कार्यों में ब्रिटिश गवर्नमेन्ट का हस्तक्षेप न चाहना।

(५) सभा की शाखायें प्रशाखायें देशी रियासतों व ब्रिटिश भारत के प्रत्येक नगर में स्थापित करना।

(६) कमसे कम ३ सदस्य मिलकर १ शाखा या प्रशाखा स्थापित कर सक्ते हैं, इनके स्थापित करने के लिये सभा की मंजूरी लेनी होगी और सभा द्वारा निश्चित शाखा से सम्बन्ध रखना पड़ेगा।

(७) सभायें और सभा के सम्पूर्ण कार्य बहुपक्षानुसार निश्चित होंगे, परन्तु यदि किसी विषय में प्रधान की सम्मति को मिलाकर दोनों पक्ष में समान सम्मति हों तो निश्चय प्रधान की सम्मति के अनुसार होगा।

(८) वार्षिक तथा नैमित्तिक साधारण सभा का कोरम एक तिहाई होगा।

(९) कोई सभासद् निम्नलिखित दशाओं में सभा का सभासद् नहीं गिना जावेगा।

(क) सभा के उद्देश्यों के प्रतिकूल होजाने पर।

(ख) पागल होजाने पर।

(ग) स्थिर रूपसे स्थान परित्याग पर, यदि प्रबन्धकारिणी सभा उचित समझे।

(घ) प्रबन्धकारिणी सभा के नियमानुसार पृथक् किये जाने पर।

(च) किसी सांक्रमिक रोग से स्थिररूप से ग्रसित होनेपर

सभा का दफ़्तर अजमेर में वा किसी अन्य केन्द्र स्थान में रहेगा, जहां सभा स्वीकार करे।

बृहद् अधिवेशन में निम्नप्रकार से प्रतिनिधि चुने जावेंगे-

राजपूताना।

बीकानेर	१६,	जैसलमेर	४,	मारवाड़	४१,
बांसवाड़ा	३,	डूंगरपुर	३,	कुशलगढ़	१,
मेवाड़	२६,	प्रतापगढ़	१,	सिरोही	४,
अलवर	१६,	भरतपुर	११,	बूंदी	४,
धौलपुर	५,	जयपुर	५३,	झालावाड़	२,
करौली	३,	किशनगढ़	२,	कोटा	१३,
लावा	१,	शाहपुरा	२,	टोंक	६,
अजमेर	८,	मेरवाड़ा	२,		

मध्यभारत।

गवालियर	६२,	इन्दौर	२०,	भोपाल	१५,
रीवां	३०,	ओरछा	७,	दतिया	३,
धार	३,	देवास सीनियर	२,	देवास ज्यूनियर	१,
समथर	१,	जावरा	२,	पन्ना	५,
चरखारी	३,	अजयगढ़	२,	छतरपुर	३,
सीतामऊ	१,	सैलाना	१,	नृसिंहगढ़	२,
झाबुवा	२,	नागोर	२,	बड़वानी	२,
अलीराजपुर	२,	खीरचीपुर	१,	रतलाम	२,
बीजावर	३,	राजगढ़	३,	मेहर	२,

उपरोक्त प्रतिनिधि एवं विषयनिर्धारिणीसभा बृहद् अधिवेशन पर चुनेंगे और इसी सभा द्वारा पास किये प्रस्ताव बृहद् अधिवेशन में पेश हो सकेंगे।

यह सभा भारतीय राष्ट्रीय महासभा के साथ सदा सहानुभूति रक्खेगी और समय २ पर देशी राज्यनिवासियों के दुःख इंडियन नेशनल कांग्रेस में प्रस्तुत कर उनके निवारण का इसके द्वारा प्रयत्न करती रहेगी।

जिन बातों के बारे में स्पष्ट नियम न हों उसमें प्रधान की सम्मति मान्य समझी जावेगी, उपरोक्त नियम सभा के बृहद् अधिवेशन पर आवश्यकतानुसार घटाये बढ़ाये व तरमीम किये जासक्ते हैं।

शमित्योम्॥

सदस्य होने का प्रतिज्ञापत्र।

श्रीयुत मन्त्रीजी,

राजपूताना मध्यभारत सभा,

अजमेर.

महाशय !

मैंने राजपूताना मध्यभारत सभा के नियम व कार्यक्रम को पढ़ लिया है। मैं उनसे सहमत हूं और सभा का सदस्य बनना चाहता हूं। मैं प्रवेश शुल्क के रूप में ।) भेजता हूं और वार्षिक चन्दे के रूप में रु० देता रहूंगा और सभा के उद्देशों की पूर्ति के लिये प्रयत्न करता रहूंगा।

ह०————————

पूरा नाम————————

पूरा पता————————

राजस्थान मध्यप्रान्त की संस्थाओं का राजपूताना
मध्यभारत सभा से सम्बन्ध करने का

आवेदन-पत्र ।

श्रीमान् मंत्रीजी,
राजपूताना मध्यभारत सभा,
अजमेर.

महाशय ! वन्देमातरम् ।

हमारी संस्था के सर्व सभासदों को राजपूताना मध्यभारत सभा के नियमोपनियम सुनाये गये, हमें सभा के राजनैतिक विभाग, सेवा-विभाग, विद्याप्रचार-विभाग से सहानुभूति है अतः प्रार्थना है कि सभा के विभाग से हमारी संस्था का सम्बन्ध कर लीजिये ।

आपका—

____

हस्ताक्षर मन्त्री,

नाम संस्था ________________________

पूरा पता ________________________

तारीख ________________________

नोट—कृपया जिस विभाग से संबन्ध न रखना चाहें उसे काटदें ।

राजपूताना मध्यभारत सभा की
रिपोर्ट।

सन् १९२०-१९२१.

जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी सो नृप अवशि नरक अधिकारी ॥

रास्तगोई को न छोड़ा है, न छोडूंगा कभी।
सर रहे या न रहे, जान रहे या न रहे ॥
जान के खौफ से, कर्तव्य से न हटूंगा कभी।
काम रह जायगा, इन्सान रहे या न रहे ॥
आजमाइश की घड़ी, मिलती है क़िस्मत से कभी।
आन रह जाय प्रभो, जान रहे या न रहे ॥

प्रकाशक—

कुँवर चांदकरण शारदा,
मन्त्री।

बाबू मथुराप्रसाद शिवहरे प्रबन्धकर्त्ता के प्रबन्ध से
वैदिक यंत्रालय, अजमेर में मुद्रित.

ओ३म्

राजपूताना मध्यभारत सभा का

उद्देश।

इस संस्था का उद्देश देशी नरेशों से प्रजा के प्रति उत्तरदायित्वपूर्ण शासन कराना है।

राजपूताना मध्यभारत सभा के अधिकारी।

सेठ जमनालालजी बजाज		प्रधान
श्रीमान् पंडित अर्जुनलालजी सेठी		उपप्रधान
,,	कुँवर गोविन्ददासजी	,,
,,	बी० एस्० पथिकजी	,,
,,	गणेशशङ्करजी विद्यार्थी	,,
कुँवर	चांदकरण शारदा	मंत्री
,,	स्वामी नृसिंहदेवजी सरस्वती	उपमन्त्री
,,	बाबू रामनारायणजी चौधरी	

जीवन उद्देश को पूरा वेही कर जाते हैं,
गैरों के वास्ते जो आदमी मर जाते हैं।
जानते बात मुबारिक इसे अपने जिये,
खुश हैं वही शहर बदर होने अगर जाते हैं।

धर्म वेदी पर जो आयें संभलकर आयें,
खेल बच्चों का नहीं इसमें तो शिर जाते हैं।
शूरवीरों का कभी हौसला जाता ही नहीं,
सख्तियां झेलके वे और उभर जाते हैं।
जो सूरमा हैं सुजायत को बढ़ा करते हैं,
जो कि नामर्द हैं वो सदमों से डरजाते हैं।
देश में है यह मुहब्बाने वतन की तौकीर,
फूल उनपर हैं बरसते हैं वो जिधर जाते हैं।
हम तो क्या चीज़ हैं आते हैं जो दिन गरदिश के,
ताज शाहों के सरों से भी उतर जाते हैं।
औरों को देश-निकाला जो दिया करते हैं,
वो सुए मुल्कि अदम बांधे कमर जाते हैं।
गर सदाचार की जानिब हो रुचि लोगों की,
मुल्क थोड़े ही ज़माने में सुधर जाते हैं।
धुनके पक्के हैं नहीं छोड़ते हुब्बे अखवां,
अपनी कोशिश में वो दुनियां से गुज़रजाते हैं।
जब के चल देते हैं मंजिले मकसद की तरफ़,
देख कर उनको तो दरिंदे भी ठिठर जाते हैं।
जो कभी राह से नहीं लेते हैं हटने का नाम,
सामने ऐसों के दरिया भी उतर जाते हैं।

ओ३म् ॥

राजपूताना मध्यभारतसभा का कार्यविवरण।

प्रार्थना।

कौम की खातिर मेरी दुनियां में गर तौकीर हो।
हाथ में हो हाथकड़ी पावों पड़ी जंजीर हो ॥
सूली मिले फांसी मिले फिर मौत दामनगीर हो।
मंजूर हो मंजूर हो मंजूर हो मंजूर हो ॥

परमपिता परमात्मा ! हम आपको अनेकानेक धन्यवाद देते हैं कि आपकी अपार दया और कृपा से यह सभा उत्तरोत्तर उन्नति कर रही है।

प्रभो ! अन्यायकारियां और दुष्टों के बल के नाश करने में और आपत्तिग्रस्त मनुष्यों की सहायता करने में हमें सदा बल देते रहिये।

प्रस्तावना।

प्रिय पाठकगण ! ता० २६ दिसम्बर सन् १९१९ का कैसा शुभ दिन था, जब पवित्र और निःस्वार्थ उद्देशों को लेकर भारत की राजधानी दिल्ली के मारवाड़ी पुस्तकालय चांदनीचौक में यह सभा स्थापित हुई थी। इसका द्वितीय बृहदधिवेशन अमृतसर में और तृतीय बृहदधिवेशन अजमेर में हुआ था। इन दोनों सम्मेलनों की कार्यवाही आपकी सेवा में छपाकर यथासमय भेजदी गई थी।

मार्च सन् १९२० तक का कार्यविवरण आपकी सेवा में सभा की १९१९-१९२० की रिपोर्ट में छापकर भेजा गया, आज हम पाठकों के सन्मुख १९२०-१९२१ की रिपोर्ट भेट करते हैं। किस उत्साह, धैर्य्य और परिश्रम के साथ सभा के कार्यकर्त्ताओं को काम करना पड़ा वह न लिखकर हम केवल कार्य्य का दिग्दर्शन कराते हैं।

कार्य का दिग्दर्शन।

राजपूताना मध्यभारत सभा की भारी विजय।

सभा अपने जन्मदिन से ही देशीराज्य निवासियों को काँग्रेस में सम्मिलित होने का प्रयत्न कर रही थी।

सन् १९१९ से दिल्ली में ही देशीराज्य निवासियों को काँग्रेस में सम्मिलित करने का प्रस्ताव कुछ सभा के कार्यकर्त्ता कर रहे थे उनको दिल्ली में असफलता हुई परन्तु उन्होंने हिम्मत नहीं हारी। काँग्रेस के नेताओं के नाम जोरदार अपीलें कीगईं और अमृतसर में सब नेताओं से कुँवर चांदकरण शारदा ने इस विषय में भेट की और सब्जैक्ट कमेटी में देशीराज्यों की प्रजा को उत्तरदायित्वपूर्ण शासन देने के लिये राजाओं को काँग्रेस की ओर से अनुरोध करने का प्रस्ताव भी रक्खा गया, लोकमान्य तिलक भगवान् ने हमें पूर्ण सहायता दी परन्तु माननीय पं० मदनमोहन मालवीयजी की सम्मति नहीं थी और इस सवाल पर बहस होने ही नहीं दी और सभापति पंडित मोतीलालजी नेहरू ने इसे Out of order, कह कर टाल दिया।

सभा के अमृतसर के बृहदधिवेशन में जो कटरा आलूवालियान में हुआ था सब्जैक्ट कमेटी के प्रधान की इस कार्य्यवाही का घोर प्रतिरोध किया गया और सभा ने आन्दोलन जारी रखने का निश्चय किया, प्रत्येक काँग्रेस के अवसर पर काँग्रेस के नेताओं के नाम खुली चिट्ठी छपवा कर बांटी गई। अजमेर में पुनः देशीराज्यों को सम्मिलित होने पर ज़ोर दिया और दिल्ली राजस्थान राजनैतिक कान्फ्रेन्स से कांग्रेस में देशीराज्यों से सम्मिलित करने का प्रस्ताव पास किया।

कलकत्ते की स्पेशल कांग्रेस में फिर यह विषय छेड़ा गया परन्तु सफलता नहीं हुई। कलकत्ते डेपुटेशन में श्रीमान् गणेशशंकरजी विद्यार्थी, अर्जुनलालजी सेठी, ठाकुर केसरीसिंहजी, चांदकरण शारदा, बी० एस० पथिकजी, जमनालालजी और मणिलालजी कोठारी पधारे थे। परन्तु आल इन्डिया कांग्रेस कमेटी में इतना अधिक काम था कि वे इकरार करने पर भी डेपुटेशन से न मिल सके। परन्तु फिर भी सभा चुप न रही बराबर आल इन्डिया कांग्रेस कमेटी के मन्त्री से पत्रव्यवहार करती रही। जिसका फल अच्छा निकला। नागपुर में देशीराज्यों के निवासी दलबल सहित पहुंचे। नेताओं के नाम अपीलें बांटी गईं, व्याख्यान दे देकर लोगों को देशीराज्यों को कांग्रेस से अलग रखने के नुकसान बताये गये। लोकमत जागृत हुआ, देश के सच्चे नेता महात्मा गांधीजी व आल इन्डियन कांग्रेस कमेटी के मन्त्री और कांग्रेस के प्रधान श्री० विजयराघवाचार्य से इस विषय में सभा की ओर से पत्रव्यवहार किया गया और वे भी देशी राज्यों के कांग्रेस में सम्मिलित करने के पक्ष में रहे।

सब्जैक्ट कमेटी में इस विषय पर नागपुर में वादविवाद हुए और देशीराज्य निवासियों को कांग्रेस में प्रतिनिधि भेजने का हक़ दिया गया, परन्तु पख यह लगाई गई कि राज्यों के अन्दरूनी मामलों में कांग्रेस कुछ हस्तक्षेप नहीं करेगी। इस पर देशी राज्यों के प्रतिनिधियों में बहुत हलचल मची और इसका घोर विरोध किया गया, परन्तु देश के सच्चे नेता पूज्यपाद महात्मा गांधीजी ने भरी कांग्रेस में यह विश्वास दिलाया कि जो २ अन्याय व अत्याचार देशी राजा करेंगे उनके विषयों में कांग्रेस में प्रस्ताव पास हो सकेंगे, उसके उदाहरण में उन्होंने बतलाया कि इसी वर्ष कांग्रेस ने देशीराज्यों से उत्तरदायित्वपूर्ण शासन प्राप्त करने का प्रस्ताव पास किया है। इसलिये प्रतिरोध वापिस लेलिया गया। कांग्रेस मण्डल में राजपूताना मध्यभारतसभा के सहकारी मन्त्री स्वामी नृसिंहदेवसरस्वतीजी ने एक ओजस्वी भाषण इसी विषय पर दिया, और बन्देमातरम् का गीत गाया, और इस प्रकार राजपूताना मध्यभारतसभा की विजय हुई और एक आन्दोलन कुछ भाग में सफल हुआ, परन्तु देशी रजवाड़ों के निवासियों को तभी संतोष होगा, जब कांग्रेस अपने इस नियम को कि अन्दरूनी मामलों में हस्तक्षेप नहीं करेंगे, कुछ अंशों में ढीला करदें चाहे कांग्रेस वाले देशीराज्यों की सुध लेने में असमर्थ रहे हों परन्तु देशी रजवाड़ों ने भारत को अच्छे नेता दिये हैं। इस समय भारत के प्रसिद्ध २ नेता और कार्यकर्ता देशीराज्यनिवासी हैं। पूज्यपाद महात्मा गांधीजी पोरबन्दर रियासत के, मौलाना मुहम्मदअली शोकतअली रामपुर रियासत के, मि० केलकर महाराष्ट्र रियासत के, मि० सत्यमूर्ति कुड़ापा रियासत के, मि० जार्ज जोशफ़ सम्पादक इन्डिपेंडेन्ट ट्रावन्कोर रियासत के,

मि० गणेशशंकर विद्यार्थी संपादक प्रताप ग्वालियर के, श्री० माखनलालजी चतुर्वेदी सम्पादक कर्मवीर जयपुर के, सेठ जमनालालजी बजाज़ सीकर के, अर्जुनलालजी सेठी जयपुर के, इसी प्रकार अधिक संख्या में नेता देशीराज्य निवासी हैं और यह कुदरती बात है कि उनको अपने देशी सुधार में पूर्ण दिलचस्पी और सहानुभूति है। देश के अन्य नेता श्रीमान् चितरंजनदास, विपिचनन्द्र-पाल, लाला लाजपतराय, डाक्टर अनसारी आदि सब नेताओं ने भी इस कांग्रेस के साथ पूर्ण सहानुभूति प्रकट की। सत्य तो यह है कि देशीराज्य निवासियों में और बृटिश भारत वालों के दिलों में एक्यता सदा से ही चली आती थी परन्तु विदेशी सर्कार ने भाई से भाई को भिन्न कर दिया था वह सब भिन्नता नागपुर में मिटगई, अब तो सम्पूर्ण भारत स्वतन्त्रता, ऐक्यता, सम्मता के नाद से गूंज रहा है।

राजपूताना मध्यभारत सभा के कार्य का दिग्दर्शन

टोंक में अत्याचार।

सभा के पास टोंक से संवाद आया था कि वहां के अधिकारियों के जुल्म से तंग आकर टोंक की गरीब प्रजा ने जो मंहगाई के कारण पहले से ही दुःखित हो रही थी, नवाब साहिब टोंक के पास प्रार्थनापत्र भेजा व जबानी प्रार्थना करी कि उनके दुःख शीघ्र ही निवृत्त किये जावें। उनका सब से ज्यादा दुःख यह था कि नाज के बाहर जाने से गल्ला बहुत ही मंहगा हो गया है और गरीब प्रजा को मंहगाई के

कारण पेट भर अन्न खाने को नहीं मिलता। टोंक निवासियों ने मैदान में एक बड़ी भारी सभा भी की जिसमें हिन्दू मुसलमानों का इत्तफ़ाक़ किया गया और लोगों को अपने अधिकारों पर दृढ़ रहने के लिये क़स्में दिलाई गई और पंचायतें कायम की गई, अंग्रेज़ पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट ने फौज से गोली चलवाकर सभा को बरखास्त करना चाहा फौज ने इन्कार किया और अंग्रेज़ सुपरिन्टेन्डेन्ट को भागना पड़ा। नवाब साहिब ने प्रजा का दुःख सुना, अपने दीवान मोतीलाल को बरखास्त कर दिया और नाज सस्ता कर दिया, परन्तु दो तीन दिन बाद ही टोंक निवासियों के भाग्य ने पलटा खाया। नवाब साहिब अपने इक़रारों से फिर गये, कइयों को गिरफ्तार किया कइयों को जेलखाने पहुंचवाये और कइयों को देश निकाला दिया और अपनी पुलिस और फौज द्वारा प्रजा पर नाना प्रकार के अत्याचार करवाये। जब ये समाचार मन्त्री सभा को ज्ञात हुए तो उन्होंने फौरन असहाय मज़लूम भाइयों के कुलों की सहायतार्थ एक स्वयंसेवक दल बनाया और उसको टोंक रियासत में जाने की आज्ञा के लिये नवाब साहिब टोंक और एजेन्ट गवर्नर जनरल राजपूताना को तार दिया ताकि जनता का हौसला कायम रहे और उसको अधिक दुःख न हो। खैर! नवाब साहिब ने कोई उत्तर न दिया परन्तु एजेन्ट गवर्नर जनरल का कुँवर चांदकरण शारदा के पास टोंक से ये तार आयाः—

TELEGRAM.

64 C. T. Your telegram of twenty third to A.G.-G. Many of the persons have to-day been released from Jail on bail and arrangements are being made for early

trial of reminds. His Highness Nawab is organizing where necessary for the care of the families of latter and of those exiled. There is, therefore, no need for outside assistance and social service party should not visit Tonk.

इसका अर्थ यह है कि तुम्हारा २२ ता० का ए. जी. जी. के नाम का तार आया बहुत से कैदी आज जमानत पर जेल से छोड़ दिये हैं और बाकी कैदियों के मुकद्दमे बहुत जल्द फैसल करने का प्रबन्ध किया जा रहा है। श्रीमान् नवाब साहिब देशनिकाला दिये हुए लोगों की तथा कैदियों के कुलों के निर्वाह के लिये प्रबन्ध कर रहे हैं। इसवास्ते बाहर की मदद और सामाजिक सेवा करने वालों के टोंक में आने की कोई जरूरत नहीं है, परन्तु पीछे से मालूम हुआ कि टोंक वाले नवाब साहिब ने आपत्तिग्रस्त देशभक्तों की कुछ भी सहायता नहीं की है तो भाई मणिलालजी कोठारी द्वारा अपील की गई। भावलपुर के देशीराज्य-निवासी एक सज्जन ने इस अपील पर २००) रुपये सहायतार्थ भेजे, जो अजमेर में आये हुए टोंक से देशनिकाला दिये हुए लोगों में बांट दिये गये। नवाब टोंक के अत्याचार अति घृणित हैं और राजपूताना मध्यभारतसभा नवाब साहिब के कृत्यों को घृणा की दृष्टि से देखती है और जेल में गये हुए भाइयों को हृदय से बधाई देती है।

नरसिंहगढ़ के अत्याचार ॥

श्रीमान् नारायणप्रसादजी भार्गव द्वारा नरसिंहगढ़ के अत्याचारों का सब हाल जानकर सभा की ओर से देशनिकाला दिये हुए भाइयों के लिये खूब आन्दोलन किया गया। एजेन्ट गवर्नर

जनरल सेन्ट्रल इन्डिया को तथा नरसिंहगढ़ महाराज को भी तार दिये गये। इस पर कुछ तहकीकात भी हुई परन्तु कुछ फल न निकला। दीवान इनायतहुसेन के अत्याचार अभी तक जारी हैं, श्रीनरसिंहगढ़-नरेश बहुत सख्त बीमार हैं और रानी साहिबा को सरकार अंग्रेज़ी ने रिजन्ट मुकर्रर किया है परन्तु अख्तियार उनको कुछ न दिये। सब अख्तियार दीवान के हाथ में हैं। दीवान साहिब नरसिंहगढ़ महाराज को भी इस सख्त बीमारी की हालत में नाना-प्रकार के कष्ट पहुंचा रहे हैं, हाल ही में नरसिंहगढ़ महाराज के खास सेवकों को होमरूलर होने के अपराध में विना मुकद्दमा चलाये ही देशनिकाले की सजा दी है। जिन सज्जनों को देश-निकाला दिया गया है, उनके नाम ये हैं:—ओंकारलाल वल्द गुलाब-चंद हजूरी, कालूजी हजूरी, रणजीतसिंह और हाथीसिंह A. D. C. to His Highness Maharaja Sahib. राजपूताना मध्यभारत-सभा इन चार सज्जनों के देशनिकाले पर बधाई देती है।

बिजोलिया का सत्याग्रह॥

सभा ने अपने जन्मकाल से ही बिजोलिया का आन्दोलन अपने हाथ में ले रक्खा है। सभा के बृहदधिवेशनों में जो अजमेर व नागपुर में हुए, बिजोलिया के सत्याग्रही किसान भी सम्मिलित होते रहे हैं। सभा की ओर से पचासों तार व पत्र व लेख इन सत्याग्रही किसानों की सहायतार्थ लिखे गये। पं० रमाकान्तजी मालवीय से भी इस विषय में पत्र-व्यवहार किया गया। सभा के ही प्रयत्न से बिजोलिया कमीशन नियुक्त हुई, परन्तु जब कमीशन ने कुछ न किया तो किसानों की सहायतार्थ श्रीमान् देशभक्त पं०

अर्जुनलालजी सेठी व मास्टर कर्मवीरजी को सभा की ओर से बिजोलिया के रावजी और किसानों के बीच में समझौता करने भेजा, अभीतक समझौते की बातचीत चल रही है। श्रीमान् बी० एस० पथिकजी जिन्होंने प्रारंभ से ही सब से अधिक दिलचस्पी इस आन्दोलन में ली है वे समझौते की शर्तें तै कर रहे हैं। हम इस विषय में श्रीमान् सेठ जमनालालजी बजाज को धन्यवाद देते हैं जिन्होंने समय २ पर बिजोलिया के किसानों की सहायतार्थ धन दिया, हम हृदय से चाहते हैं कि बिजोलिया के किसानों के सब कष्ट दूर हों और उनको अपने सत्याग्रह व्रत पर दृढ़ रहने पर बारम्बार बधाई देते हैं।

बेगूं॥

जब सभाने बेगूं में उदयपुर महाराना के अत्याचारों की वार्ता समाचारपत्रों में पढ़ी तो सभा की ओर से प्रजा को हिम्मत बनाने के लिये श्रीमान् कन्हैयालालजी कलंत्री गये उन्होंने सारे मेवाड़ की किसान-सभा जो वैशाखी पूर्णिमा पर मातृकुण्ड स्थान में हुई उसका संगठन किया, तथा धूपमें पैदल फिरकर किसान मुखियाओं को कार्य करने का ढंग बताया, चित्तौड़गढ़ के सारे ज़िले के बलाइयों को शराब की बुरी आदत छुड़वाई। सभा बेगूं के गरीब किसानों से हार्दिक सहानुभूति प्रगट करती है जो महाराणा की डायरशाहियों की गोलियों की शिकार हुए और उनको सत्याग्रहव्रत में दृढ़ रहने के लिये बधाई देती है।

अन्य रियासतों में कार्य॥

राजपूताना के जिन २ रियासतों वालों ने सभा के दफ्तर में अपनी दुःख--कथा भेजी वह समाचारपत्रों में बराबर छपाई जाती रही है और दुःखियों को यथायोग्य सहायता भी दी गई है।

राजस्थान केसरी॥

राजस्थान केसरी के जन्म देने का विचार राजपूताना मध्यभारत के तृतीय बृहदधिवेशन में हुआ था जो अजमेर नगर में ता० २८ मार्च १९२० को सेठ जमनालालजी बजाज के प्रधानत्व में हुआ था, इसके बाद इस प्रस्ताव को कार्य में परिणत करने के लिये एक कार्य-कारिणी सभा बनाई गई थी जिसमें निम्नलिखित सज्जन चुने गये थे:—

श्रीमान् जमनालालजी बजाज, कुँवर चाँदकरण शारदा, श्रीमान् इन्द्रजी विद्यावाचस्पति संपादक "विजय" देहली, श्रीमान् गणेशशंकरजी विद्यार्थी संपादक "प्रताप", श्रीमान् गोपालसिंहजी खरवानरेश, श्रीमान् मणिलालजी कोठारी, श्रीमान् पंडित अर्जुनलालजी सेठी, श्रीमान ठाकुर केसरीसिंहजी और श्रीमान् बी. एस. पथिकजी।

इस कार्यकारिणी सभा की बैठक ता० २९ मार्च १९२० को हिन्दू होटल अजमेर में हुई थी और वहां पर पत्र के सम्बन्ध में ट्रस्टडीड बनाने का भार श्रीमान् मणिलालजी कोठारी को सौंपा गया। ट्रस्ट-डीड के मसोदे आनेपर ता० १९ जून १९२० को बम्बई में राज-पूताना मध्यभारत कार्यकारिणीसभा हुई थी उसमें निम्नलिखित विषय निश्चय हुए थे:—

(१) पत्र निकालने का निश्चय जो अजमेर में हो चुका है उसका नाम "राजस्थान केसरी" रक्खा जाय।

(२) पत्र वर्धा में प्रकाशित किया जाय।

(३) पत्र की नीति होगी देशी राज्यों की प्रजा की हर प्रकार की उन्नति करने तथा उसे उन्नति क्षेत्र में देश भर के साथ बनाये रखने के लिये सत्यनिष्ठा और निर्भीकता के साथ वैध उपायों द्वारा प्रमाण करना।

(४) नीति में परिवर्त्तन नहीं होगा।

(५) पूंजी १००००) की होगी।

(६) पत्र और प्रेस का कार्य करने के लिये ३ आदमियों की १ छोटी कमेटी हो जिसमें ठाकुर केशरीसिंहजी, राष्ट्रीयवर पथिकजी तथा एक और सज्जन होंगे जिनका नामनिर्देश होना बाकी है।

(७) बड़ी कमेटी जो अजमेर में बनचुकी है और जिसमें ८ सज्जन हैं उसके ये काम होंगे:—

(अ) मासिक आय व्यय का हिसाब जांचना।

(आ) किसी खास कार्य के लिये १०००) तक खर्च करने के लिये अनुमति देना।

(इ) कार्यकारिणी कमेटी के काम करने या अस्तीफा देने पर दूसरा प्रबन्ध करना।

(८) भाई रमणीक अमृतलाल मेहता "हिन्दुस्तान" संपादक बंबई का नाम बड़ी कमेटी में दाखिल करना।

इसके पश्चात् कलकत्ते की स्पेशल कांग्रेस के अवसर पर ता० ७–९–२० को राजपूताना मध्यभारतसभा का विशेष अधिवेशन हुआ। और ता० ८–९–२० को कार्यकारिणीसभा का अधिवेशन हुआ। उसमें भी उपरोक्त बातों का समर्थन हुआ, और उसीके प्रस्तावानुसार सेठ जमनालालजी बजाज ने यही समझ कर कि राजपूताना मध्यभारत सभा की ओर से "राजस्थान केसरी" निकाला जायगा। ठाकुर केसरीसिंहजी व श्रीमान् बी. एस. पथिक को प्रेस के लिये रुपया दिया। बंबई में जो चन्दा एकत्रित हुआ था, राजपूताना मध्यभारत के प्रपोगेन्डा के लिये था, इसमें पत्र की सहायता करना भी शामिल था, परन्तु सभा से आज तक सहायतार्थ धन नहीं मांगा गया। यह बम्बई के चंदे का ही प्रताप था कि राजपूताना मध्यभारतसभा इतना आन्दोलन कर सकी। अजमेर, कलकत्ता, नागपुर के बृहदधिवेशन कर और "राजस्थान-केसरी" पत्र को जन्म दे सभा ने निश्चय ही राजस्थान मध्यभारत में नवीन जाग्रति की है और सारे प्रान्त को संगठन में लाई है।

'राजस्थानकेसरी' की जन्मदाता व मालिक राजपूताना मध्यभारतसभा है और जब सभा देशभक्त सेठ जमनालालजी बजाज का कर्जा चुका देगी तब ही पत्र व प्रेस इस पर कब्जा प्राप्त करलेगी। आजकल इसका प्रबन्ध एक प्रेस कमेटी के आधीन में है जो बहुत ही भली प्रकार कार्य कर रही है, हमें लिखते हुए अत्यन्त हर्ष होता है। पत्र सभा की नीति के अनुसार चलरहा है। पहिले श्रीमान् बी० एस० पथिकजी ने इसका सुसंपादन किया है और उनके बाद श्रीमान् सत्यदेवजी के संपादकत्व में उत्तरोत्तर उन्नति करता हुआ राजस्थानियों का प्रेमभाजन बनगया है। सभा दोनों सभासदों को

बधाई देती हुई यह अपील किये बिना नही रह सक्ती कि यह पत्र देशी राज्यों की प्रजा और राजाओं को सुधारने का अग्रभाग ले रहा है, और प्रत्येक देशभक्त को इसका ग्राहक बनना चाहिये।

सभा के कार्यालय के प्रताप से ही स्थान २ पर देशी राज्यों में निर्भयता उत्पन्न हुई है और देशी राज्यों का प्रश्न इतना बल-पूर्वक जनता के सामने उपस्थित किया गया है। सभा के कार्यालय से बीसों लेख देशी राज्यों के प्रश्न पर लिखे गये और समाचार-पत्रों में छपवाये गये।

सभा का हिसाब ॥

सभा का हिसाब ब्योरेवार कार्य-कारिणी सभा में प्रस्तुत किया गया, जिसमें निम्नलिखित सज्जन उपस्थित थेः—

स्वामी नृसिंहदेव सरस्वती, कुंवर चांदकरण शारदा, गणेशनारायणजी सोमाणी, पंडित अर्जुनलालजी सेठी, राव गोपालसिंहजी खरवाधिपति, रामनारायणजी चौधरी, मणिलालजी कोठारी आदि की सर्व सम्मति से जांच कर ही पास किया गया। इसका ब्यौरा इस प्रकार हैः—

हिसाब आय ता० ८-२-२१ से ता० ५ मार्च सन् १९२१ तक २६।।।=) पिछले हिसाब के। श्रीयुत गणेशशंकरजी विद्यार्थी कानपुर द्वारा प्राप्त हुए। ३६७३!!) आय ता० ८-२-२० से ता० ५-३-२१ तक सभा को प्राप्त हुई। कुल ३७७०।=), व्यय ता० ८-२-२० से ता० ५-३-२१ तक २२२७) पत्रव्यय, तारव्यय,

स्टेशनरी, क्लर्क का वेतन, उपदेशक वेतन, चपरासी वेतन, दफ्तर के लिये अलमारे, छपाई, अजमेर व कलकत्ता के वृहद्धिवेशनों में व्यय समाचार पत्र आदि में कुल व्यय १४७३।) सभा के कोष में शेष रहे। जिस किसी सभासद् को संदेह हो वह सभा के दफ्तर में आकर हिसाब देख सक्ता है।

सभा का दफ्तर ॥

जनवरी १६२० से सभा का दफ्तर अजमेर ही में रहा और इस अरसे में कुल ७०८ पत्र प्राप्त हुए और दफ्तर से कुल १८१३ पत्र व चिट्ठियें व पैकेट भेजे गये।

धन्यवाद ॥

हम हिन्दी के सभी समाचारपत्रों के संपादकों को धन्यवाद देते हैं जिन्होंने कृपाकर हमारे लेखों को व समाचारों को अपने अमूल्य पत्रों में स्थान दिया और आशा करते हैं कि वे आगामी में भी सभा पर इसी प्रकार कृपा रक्खेंगे और देशी राज्यों के प्रश्नों पर बराबर कुछ न कुछ लिखते रहेंगे।

राजपूताना मध्यभारत सभा कलकत्ते के विशेष अधिवेशन का वृत्तान्त ॥

राजपूताना मध्यभारत सभा के मंत्री कुँवर चाँदकरण शारदा, प्रधान-सेठ जमनालालजी बजाज; सहकारी मंत्री श्रीमान् गणेशशङ्करजी विद्यार्थी व कार्यकारिणी सभा के सभासद श्रीमान् बी. एस. पथिकजी, ठाकुर केसरीसिंहजी, श्रीमान् अर्जुनलालजी सेठी, श्रीमान् सत्यव्रतजी संपादक विजय; मणिलालजी कोठारी आदि विशेष कांग्रेस के अवसर पर कलकत्ता पहुंचे और कॉंग्रेस के नेताओं के नाम खुली चिट्ठी (सीकर राज्य के घोर अत्याचार) मेमोरियल टू कांग्रेस लीडर्स आदि अनेक लेख हिन्दी अंग्रेजी में सहस्रों की तादाद में छपाकर बांटे और लोगों को राजपूताना मध्यभारत सभा के उद्देशों को समझाए तथा कॉंग्रेस के सर्व गणयमान नेताओं को देशी राज्यों के प्रश्न की ओर आकर्षित किया। मंगलवार की रात के ८ बजे श्री माहेश्वरी सभा भवन नं० १८ हरमम गली में श्रीमान् रायबहादुर जमनालालजी बजाज वर्धावालों की अध्यक्षता में सभा का विशेष अधिवेशन देशी रजवाड़ों के जुल्मों, वहां की पीड़ित प्रजा की रक्षा के उपाय सोचने के निमित्त हुई। उपस्थिति लगभग २००० के थी। उपस्थित सज्जनों में बा० गणेशशङ्करजी विद्यार्थी संपादक "प्रताप", बाबू मूलचंदजी अग्रवाल संपादक "विश्वमित्र", पं० सत्यदेवजी स्नातक "विजय", ठा० केसरीसिंहजी कोटावाले, पं० झावरमलजी शर्मा, बा० गंगाप्रसादजी, बा० महावीरप्रसादजी पोद्दार, बा० पद्मराजजी जैन, बा० रामकुमारजी जाजान, बा० मोतीलालजी प्रहलादका,

बा० तुलसीरामजी श्रावगी, बा० वसंतलालजी मुरारका आदि कई गण्यमान सज्जन उपस्थित थे। सर्वसम्मति से निम्नलिखित प्रस्ताव स्वीकृत हुए:—

(१) कलकत्ताप्रवासी राजपूताना एवं मध्यभारत निवासियों की यह विराट् सभा राजपूताना मध्यभारत सभा के विशेष अधिवेशन में एकत्रित होकर प्रस्ताव करती है कि देशी रजवाड़ों की कष्टपीड़ित प्रजा के कष्टों को दूर करने के लिये तथा उन्हें देश की उन्नति में पूर्णतया साथ बनाये रखने के लिये समस्त देशी नरेशों से विशेषतः प्रार्थना करती है कि वे बहुत शीघ्र अपने राज्यों में उत्तरदायित्व शासन की व्यवस्था करें क्योंकि इसी में राजा और प्रजा दोनों का कल्याण है।

प्रस्तावकः—झावरमलजी शर्मा,

अनुमोदकः—गणेशशङ्करजी विद्यार्थी संपादक "प्रताप",

समर्थकः—बा० मूलचन्दजी अग्रवाल संपादक "विश्वामित्र"

" " मोतीलालजी अह्लादका,

(२) यह सभा प्रस्ताव करती है कि इन प्रस्तावों की एक २ नकल कांग्रेस के पास और देशी नरेशों के पास भेजी जावे।

प्रस्तावकः—देवीप्रसादजी,

अनुमोदकः—मिश्रीलालजी केला,

प्रथम प्रस्ताव का अनुमोदन करते हुए बाबू गणेशशङ्करजी विद्यार्थी एवं समर्थन करते हुए बा० मूलचन्दजी अग्रवाल ने रोमांचकारी

शब्दों में देशी रजवाड़ों के अत्याचारों का वर्णन किया और उनके पूर्वजों की न्यायपरायणता एवं उदारता की प्रशंसा करते हुए स्पष्ट दिखाया कि जबतक देशी नरेश उत्तरदायित्वपूर्ण शासन की व्यवस्था नहीं करेंगे वहां के कर्मचारियों के भयंकर अत्याचारों की ओर उन से पीड़ित प्रजा के कष्टों की सीमा नहीं रहेगी, दोनों वक्ताओं का प्रभाव जनता पर अच्छा पड़ा ॥

दूसरे प्रस्ताव को उपस्थित करते हुए पंडित सत्यदेवजी भ्रातक संपादक "विजय" ने और समर्थन करते हुए बा० पद्मराजजी जैन ने तथा ठा० केसरीसिंहजी ने बड़े प्रभावशाली शब्दों में यह बतलाया कि जबतक इस राष्ट्रीय महासभा के अधिवेशनों में देशी रजवाड़ों की प्रजा के प्रतिनिधि सम्मिलित नहीं होवेंगे तबतक देश का सच्चा सुधार, जिसकी कि इस महाराष्ट्र को अत्यन्त आवश्यक्ता है, होना असम्भव है। देशी रजवाड़ों की प्रजा को कहने और सुनने का अधिकार अवश्य मिलना चाहिये, इसी में दोनों का भला है। बा० पद्मराजजी जैनने बतलाया कि कांग्रेस को देशी रजवाड़ों की प्रजा के प्रतिनिधि लेने होंगे और वह लेवेगी और निर्भयतापूर्वक अपने अधिकारों को प्राप्त करने की एवं रक्षा करने की। अन्त में सभापति महोदय को धन्यवाद देकर सभा विसर्जित हुई और इसकी शाखा कलकत्ते में खोली जाने के विषय में पूर्णरूप से विचार करने के लिये शीघ्र ही एक बार और सभा करने की सूचना दी गई। हम इस सभा की सफलता के लिये श्रीमान् रामप्रसादजी हुरकट व श्रीमान् पद्मराजजी जैन को धन्यवाद देते हैं।

राजपूताना-मध्यभारत सभा के नागपुर के चतुर्थ बृहदधिवेशन की कार्यवाही, सर्व देशी राज्य कान्फ्रेन्स ॥

श्रीमान् सेठ जमनालालजी बजाज के प्रधानत्व में अजमेर के बृहदधिवेशन में यह तय हुआ था कि समस्त देशी राज्यों की एक बड़ी कान्फ्रेन्स की जावें, इसके लिये नागपुर में सारे भारत के देशी राज्य निवासियों को निमन्त्रित किया गया, श्रीमान् केलकरजी संपादक "मरहटा" ने सभापति का आसन ग्रहण करना भी स्वीकार कर लिया था। सभा के दफ्तर में सारे भारत देशी राज्यों की दुःखित प्रजा के अनेक पत्र आने लगे। शिमला की पहाड़ी रियासतों से लेकर पंजाब, राजस्थान, मध्यभारत, काठियावाड़, बम्बई, पुड्डी कोटा, मद्रास, माइसोर, हैदराबाद, ट्रावन्कोर महाराष्ट्र तक के देशीराज्य निवासी इस कान्फ्रेन्स की ओर टकटकी लगाये बैठे थे। पहिले ता० २६ दिसंबर को कांग्रेस पंडाल में जलसा निश्चय हुआ था, परंतु सब्जेक्ट कमेटी का चुनाव रात्रि तक होता रहा इसलिये कान्फ्रेंस की सूचना २७ तारीख को मारवाड़ी सेवासंघ में होने को दीगई। ता० २७ के सायंकाल के ७ बजे को करीब ४ सहस्र भिन्न २ प्रान्तों के देशी राज्यनिवासी एकत्रित हुए। श्रीमान् केलकरजी सब्जेक्ट कमेटी में लगे हुए थे इस कारण नहीं पधार सके और सर्वसम्मति से श्रीमान् गणेशनारायणजी सोमाणी सभापति चुने गये। कुँवर चांदकरण शारदा ने प्रतिनिधियों का स्वागत करते हुए देशीराज्य निवासियों के

अधिकारों पर प्रभावशाली भाषण दिया और कहा कि पहिले हम प्रार्थना से महाराजाओं को समझायेंगे और यदि वे नहीं मानेंगे तो उनके साथ भी वही व्यवहार किया जायगा जो ब्रिटिश भारतनिवासी अंग्रेजी सल्तनत के साथ कर रहे हैं। उन्होंने त्याग और निःस्वार्थ सेवा पर कहते हुए प्रेम और एकता पर अधिक बल दिया। जो एकता की महिमा जानते हैं वे फौरन अखिलभारत देशीराज्य कान्फ्रेंस के महत्व को समझ गये होंगे। अकेली राजपूताना मध्यभारतसभा की आवाज कांग्रेस में इतने महत्व से नहीं सुनी जासक्ती जितनी कि सारे भारत के देशीराज्य निवासियों की कान्फ्रेंस की बात सुनी जासक्ती है। इसलिये आज की कान्फ्रेंस के प्रस्तावों से इन्डियन् नेशनल कांग्रेस को अवश्य ही देशीराज्य निवासियों को सम्मिलित करना होगा और उनके दुःखनिवारण में सहायता देनी होगी। परन्तु देशीराज्य निवासियों को स्वावलम्बन सीखना चाहिये। और अपने पैरों आप खड़ा होकर सब अत्याचारों के नाश पर कटिबद्ध होजाना चाहिये।

तत्पश्चात् श्रीमान् गणेशनारायणजी सोमाणी जयपुरवाले सभापति जयघोषों में उठे और ओजस्वी भाषण दिया जो छपाकर सब सभासदों को भेज दिया गया है। दूसरे दिन तारीख २८ दिसम्बर को कुंवर गोविंददासजी महामन्त्री जबलपुर व जैसलमेर वालों ने सभापति का आसन ग्रहण किया, तारीख २९ दिसम्बर १९२० को श्री० स्वामी नृसिंहदेवजी सरस्वती ने सभापति का आसन ग्रहण किया, तीनों दिन निम्निलिखित प्रस्ताव पास हुए।

चतुर्थ राजपूताना मध्यभारत देशीराज्य कान्फ्रेंस नागपुर के पास हुए प्रस्ताव॥

१–यह कान्फ्रेंस प्रस्ताव करती है कि देशीराज्यों की प्रजा, जो बृटिश भारत से खून और जातीयता का सम्बन्ध रखती है, राष्ट्रीय महासभा में सम्मिलित करली जाय और जो जो देशी रियासतें जिस प्रान्त में हैं वे उसी प्रान्त की कांग्रेस-कमेटी में सम्मिलित करली जावें और उनको नियमानुसार वोट देने का अधिकार रहे और आल इन्डिया कमेटी में भी आबादी के लिहाज से प्रतिनिधि चुने जावें।

प्रस्तावकः—राधामोहन गोकुलजी,

अनुमोदकः—भगवानजी (काठियावाड़ी)

२–यह कान्फ्रेंस देशी नरेशों से अनुरोध करती है कि वे अपनी प्रजा को उत्तरदायित्वपूर्ण शासन शीघ्र ही प्रदान करें।

प्रस्तावकः—सुखसम्पतिरायजी भंडारी,

अनुमोदकः—मणिलालजी कोठारी,

,, कन्हैयालालजी कलन्त्री,

३–यह कान्फ्रेंस प्रस्ताव करती है कि देशी रियासतों की आमदनी राजा नवाबों की निजी जायदाद नहीं इसलिये प्रत्येक रियासत को प्रजा से वसूल किये हुए कर को प्रजा के हित ही में व्यय करना चाहिये, इसलिये प्रत्येक देशी नरेश से प्रार्थना करती है कि वे अपने और अपने खानदान के खर्च के लिये नियमित रकम लें, रियासत की आमदनी के लिहाज से ज्यादा न होनी चाहिये।

बाकी के सब रुपये प्रजा के हित में प्रजा के प्रतिनिधियों की इच्छा से खर्च करें और ऐसे सब टेक्स हटा दें जिन से प्रजा में असंतोष फैलते हैं।

प्रस्तावकर्ताः—चांदकरण शारदा,
अनुमोदकः—मणिलालजी कोठारी

४—यह कान्फ्रेंस देशी नरेशों से आग्रह करती है कि वे अपने राज्यों में समाचारपत्र और प्रेसों के प्रचार में किसी प्रकार की बाधा न डालें।

प्रस्तावकर्त्ताः—सत्यदेवजी, केसरीमलजी,

५—यह कान्फ्रेंस उन राजाओं को धन्यवाद देती है जिन्होंने अपने राज्यों में प्रारम्भिकशिक्षा अनिवार्य कर दी है और अन्य देशी नरेशों से प्रार्थना करती है कि वे भी अपने २ राज्यों में प्रजा के लिये मुफ्त और अनिवार्य करदें।

प्रस्तावकः—माणिकचन्द्रजी जैन,
अनुमोदकः—ललिताप्रसादजी,

६—यह कान्फ्रेंस गरीब किसानों, कारीगरों और महाजनों से बेगार लेने की प्रथा को स्वतन्त्रता का बाधक समझती है और बेगार की प्रथा को बन्द करने का प्रस्ताव करती है।

प्रस्तावकः—शिवबिहारीजी,
अनुमोदकः—केशरलालजी काला,
पृथ्वीनाथसिंहजी,

७—यह कान्फ्रेन्स प्रस्ताव करती है कि देशीराज्यों के रहनेवाले लोगों के मकान व जमीन ताबे मर्जी मालिक न समझे जावें और प्रार्थना करती है कि जिस २ के कब्जे में जो जो जमीन और मकान मालिकाना तौर से चले आते हैं, उसके मालिक वे ही समझे जावें और किसानों और खेती की दशा सुधारने पर ध्यान दिया जावे।

सभापति द्वारा,

—यह कान्फ्रेन्स नरेन्द्रमंडल से प्रार्थना करती है कि वह अपनी ३ फरवरी सन् १९२१ की बैठक में देशीराज्य-निवासियों के प्रति अपनी नीति की घोषणा करे ताकि देशीराज्य निवासी शीघ्र ही उत्तरदायित्वपूर्ण शासन प्राप्त कर सकें और राजा और प्रजा में कोई बदगुमानी न फैले और न कोई नये आन्दोलन के खड़े करने की आवश्यक्ता प्रतीत हो।

सभापति द्वारा,

९—यह सभा बिजोलिया के कृषकों पर जो अत्याचार हो रहे हैं उनके विषय में महाराणा उदयपुर की अद्यावधि नीति का घोर विरोध और तिरस्कार करती है एवं बिजोलिया वालों के साथ सहानुभूति प्रकट करती है और उनके धैर्ययुक्त सत्याग्रह की प्रशंसा करती है और परामर्श देती है कि धर्म न्याय की प्राप्ति तक वे इस धर्मयुद्ध में डटे रहें। यह सभा समस्त राजस्थानियों से प्रार्थना करती है कि बिजोलिया के सत्याग्रहियों को सर्व प्रकार की सहायता करें और रुपया अधिक से अधिक निम्न-

लिखित महाशयों की एक बिजोलिया-सत्याग्रह-सहायककोष-कमेटी नियत करती है ।

प्रस्तावकः—ब्रह्मचारी हरीजी,

अनुमोदकः—रामनारायणजी,

,, अर्जुनलालजी सेठी,

,, जमनालालजी बजाज,

१०—यह कान्फ्रेन्स सीकर राज्य में थानादारी इत्यादि का ठेके पर दिये जाने का घोर विरोध करती है और मांगीलाल सीकर-निवासी के मारनेवाले को उचित दंड दिये जाने के लिये सीकर-नरेश से प्रार्थना करती है ।

सभापति द्वारा,

११—यह कान्फ्रेन्स प्रस्ताव करती है कि सभा का डेपुटेशन शीघ्र ही सब देशी नरेशों की प्रजा के दुःख सुनाये और उन के दुःखों का उचित निवारण करे ।

प्रस्तावकः—स्वामी नृसिंहदेवजी सरस्वती ।

अनुमोदकः—आदित्यहृदयजी ।

निम्नलिखित सज्जन डेपुटेशन में होंगे:—

श्री० कुं० चांदकरण शारदा,	श्री० स्वामी नृसिंहदेवजी सरस्वती,
श्री० राधामोहन गोकुलजी,	श्री० अर्जुनलालजी सेठी,
श्री० जमनालालजी बजाज,	श्री० वी० एस० पथिकजी,
श्री० गणेशशंकरजी विद्यार्थी,	श्री० कुँवर गोविन्ददासजी,
श्री० शिववल्लभजी,	श्री० गणेशनारायणजी सोमाणी,

१२—यह कान्फ्रेन्स बीकानेर महाराज के व्याख्यान पर घृणा प्रकट करती है जो उन्होंने हाल में ही वायसराय के समक्ष में राजभोज के समय भारत के वीर असहयोगियों को दबाने के लिये दिया था।

प्रस्तावकः—मक्खनलालजी चतुर्वेदी, सम्पादक "कर्मवीर" जबलपुर,

१३—यह कान्फ्रेन्स ग्वालियर महाराज के जलियानवाला बाग के चन्दा करने के लिये पवित्र कार्य में बाधा डालने पर शोक प्रकट करती है।

सभापति द्वारा,

१४—यह कान्फ्रेंस मारवाड़ के जागीरदारों और छोटी जातियों पर अत्याचार का घोर विरोध करती है।

प्रस्तावकः—गणेशनारायणजी सोमाणी,
अनुमोदकः—सभापति,

१५—यह कान्फ्रेन्स चाहती है कि देशी राज्यों में योग्य स्थानों में योग्य पुरुष रक्खे जावें।

प्रस्तावकः—सुखसम्पतिरायजी भंडारी,
अनुमोदक—नृसिंहदेवजी सरस्वती,

१६—राजा पीसांगन का नया कर नाजायज है। यह कान्फ्रेंस पीसांगन-निवासियों को बधाई देती है कि सत्याग्रह करके नया कर नहीं दिया और लोकमान्य की जय कराई।

प्रस्तावक:—गुमानमलजी,

अनुमोदक:—सभापति,

१७-देशी राज्यों की प्रजा में जाग्रति उत्पन्न करने के लिये तथा देशी राज्यों की प्रजा की वास्तविक स्थिति जानने के लिये देश के कुछ प्रभावशाली और सन्माननीय नेताओं का देशी राज्यों में भ्रमण करना आवश्यक है। केवल यहां के प्रस्तावों से या डेपुटेशन जाने से वहां कुछ प्रभाव नहीं पड़ सक्ता। प्रजा को जगाने के लिये यहां के नेता भ्रमण करें समस्या में अपने प्राणों की आहुति दें।

प्रस्तावक:—भूरालालजी कथाव्यास (शाहपुरा मेवाड़),

अनुमोदक:—आदित्यहृदय सम्पादक "मार्तण्ड" बूंदी,

१८-पलटन वालों ने इन्दौर राज्य में निर्दोष प्रजा के ऊपर बडगोंद में गोली चलाई थी उनको कुछ भी सजा अभी तक नहीं हुई इसलिये इन्दौर-नरेश से प्रार्थना है कि वे दोषियों को सजा दें।

प्रस्तावक:—भगवानदासजी अग्रवाल छावनी मऊ,

अनुमोदक:—सभापति,

१९-ग्वालियर राज्य में ज़िला अमजीरा के कर्मचारी मनमाना अत्याचार प्रजा पर करते हैं, इसलिये ग्वालियर-नरेश को इत्तला दीजाय कि वे इसे शीघ्र बन्द करें।

प्रस्तावक:—भगवानदासजी अग्रवाल छावनी मऊ,

२०–जयपुर राज्य के अन्दर शेखावाटी में (कस्टम) चूंगी की वजह से व्यापार की तरक्की नहीं होती और बेगार का घोर अत्याचार होता है। इसलिये श्रीमान् जयपुर-नरेश से निवेदन करते हैं कि इन अत्याचारों को बन्द करें।

प्रस्तावकः—भगवानदासजी अग्रवाल,
अनुमोदकः—सभापति,

२१–यह कान्फ्रेन्स कांग्रेस के नेताओं के इस निश्चय पर शोक प्रकट करती है कि उन्होंने देशी रजवाड़ों का अन्दरूनी मामलों में हस्तक्षेप न करने का निश्चय किया, और कांग्रेस के डेलीगेटों से प्रार्थना करती है कि वे कांग्रेस में देशी रजवाड़ों को न केवल सम्मिलित करें वरन् वहां की प्रजा के प्रत्येक प्रकार के हित का प्रस्ताव करें।

सभापति द्वारा,

२२–यह कान्फ्रेन्स नृसिंहगढ़ राज्य के अत्याचारों का घोर विरोध करती है और नारायणप्रसाद और हिम्मतराम के अनुचित देशनिकाले पर घृणा प्रकट करती है।

प्रस्तावकः—नारायणप्रसादजी,
अनुमोदकः—सागरमलजी,

२३–यह सभा श्रीमान् वल्लभदासजी जीवनदासजी को धन्यवाद देती है जिन्होंने अपनी भूमि बिना लगान ३ साल के लिये देना स्वीकार किया है और उसके पश्चात् भी केवल सर्कारी लगान जो कि सर्कार को भरना पड़ता था वही लेंगे।

प्रस्तावकः—गणेशनारायणजी सोमाणी,

अनुमोदकः—ब्रह्मचारी हरीजी,

२४-यह कान्फ्रेन्स मारवाड़ी सेवासंघ को अनेकानेक धन्यवाद देती है कि उन्होंने सभा के प्रत्येक काम में सहायता दी और सभा की सफलता में पूर्ण भाग लिया।

सभापति द्वारा,

कार्य-कारिणी सभा के अधिकारी चुने जाने के लिये (मारवाड़ी सेवासंघ राजस्थान कैम्प) नागपुर में कांग्रेस के अवसर पर मुख्य बैठक—

२६ दिसम्बर १६२० ।

सभापति श्रीयुत ठाकुर केसरीसिंहजी ।

उद्देश व नियम पर वादविवाद होकर श्रीयुत अर्जुनलालजी सेठी का प्रस्ताव पास हुआ।

इस संस्था का उद्देश देशी राज्यों में नरेशों से प्रजा के प्रति उत्तरदायित्वपूर्ण शासनपद्धति प्राप्त करानी है। अन्य नियमों पर विचार करने के लिये निम्नलिखित सज्जनों की एक मीटिंग बनाई जाय।

संयोजकः—स्वामी नृसिंहदेवजी सरस्वती,

अन्यसज्जनः-बी. एस. पथिकजी, अर्जुनलालजी सेठी,
ठा० केसरीसिंहजी, रामनारायणजी,

आगामी वर्ष के पदाधिकारी और कार्यकारिणी के सदस्य निम्नलिखित सज्जन चुने गये:—

श्रीयुत जमनालालजी बजाज	प्रधान
,, बी. एस. पथिकजी	उपप्रधान
,, ठाकुर केसरीसिंहजी	,,
,, अर्जुनलालजी सेठी	,,
,, गणेशशंकरजी	,,
,, कुँवर गोविन्ददासजी	,,
,, कुँवर चांदकरण शारदा	प्रधान मन्त्री
श्रीयुत स्वामी नृसिंहदेवजी सरस्वती	सहायक मन्त्री
,, बाबू रामनारायणजी चौधरी	,,

सभासद् ।

१	श्रीमान्	ब्रह्मचारी हरिवल्लभजी	चित्तोड़गढ़
२	,,	भगवानदासजी अग्रवाल	मऊ
३	,,	बालमुकुन्दजी भराणी	इन्दौर
४	,,	गणेशनारायणजी सोमाणी	जयपुर
५	,,	शिवबिहारीजी तिवारी	जयपुर
६	,,	आदित्यहृदयजी	बूंदी
७	,,	केसरीलालजी काला	जयपुर
८	,,	हरिकृष्णजी माहेश्वरी	सांभर
९	,,	राधामोहन गोकुलजी	कलकत्ता
१०	,,	ठाकुर डूंगरसिंहजी	(उदयपुर)
११	,,	मणिलालजी कोठारी	अहमदाबाद

१२	श्रीमान	हीरालालजी जालोरी	कोटा
१३	,,	गिरधरशर्माजी	झालरापाटन
१४	,,	गोपीवल्लभजी संपादक-चित्रमय 'जगत्'	पूना
१५	,,	पंडित श्रीरामशर्मा	चूरू
१६	,,	देवीबक्सजी सर्राफ़	कलकत्ता
१७	,,	कन्हैयालालजी कलंत्री	फलोदी
१८	,,	रामप्रसादजी दुग्कट	कलकत्ता
१९	,,	नारायणप्रसादजी भार्गव	नरसिंहगढ़
२०	,,	शिववल्लभजी मांगधना	सांभर
२१	,,	भूरालालजी कथाव्यास	शाहपुरा
२२	,,	सुखसम्पत्तिरायजी भंडारी	इन्दौर
२३	,,	शंकरलालजी वर्मा	जबलपुर
२४	,,	पंडित सत्यदेवजी विद्यालंकार	वर्धा
२५	,,	सागरमलजी गोपा	जैसलमेर
२६	,,	महादेवलालजी पोद्दार	भागलपुर
२७	,,	निरंजननाथजी थानेदार	अलवर
२८	,,	चांदमलजी मिलक	अजमेर
२९	,,	सज्जनसिंहजी गोवर्धन	(जि० मथुरा)
३०	,,	जगन्नाथजी अधिकारी	भरतपुर

कोषाध्यक्ष श्रीयुत जमनालालजी बजाज सेन्ट्रलबैन्क अजमेर। सभा का प्रधान कर्यालय अजमेर में ही रहे।

प्रस्तावकः—सत्यदेवजी

अनुमोदकः—कन्हैयालालजी कलंत्री

मारवाड़ी सेवासंघ ॥

पहिले इसके कि हम सभा के बृहदधिवेशन का वृत्तान्त समाप्त करें, हम हृदय से मारवाड़ी सेवासंघ नागपुर को अनेकानेक धन्यवाद देते हैं, क्योंकि यदि ये वीर देशभक्त स्वयंसेवक प्रबन्ध न करते तो सभा का अधिवेशन होना असंभव था। हम सभा की ओर से विशेष कर श्रीमान् कर्मवीर ब्रजलालजी बियाणी सभापति "मारवाड़ी सेवासंघ" को उनके सुप्रबन्ध पर बधाई देते हैं। जिस प्रेम से उन्होंने प्रतिनिधियों के भोजन व ठहरने का सुप्रबन्ध किया था उसके लिये वारम्बार प्रत्येक के मुख से वीर मारवाड़ी युवकों के लिये आशीर्वाद निकलते थे। हमारी सभा के प्रधान श्रीमान् सेठ जमनालालजी बजाज और अन्य वीर मारवाड़ियों ने नागपुर में 'मारवाड़ी' शब्द का गौरव और सिक्का सारे भारतवर्ष में जमा दिया। और अब कोई नहीं कह सका कि वीर मारवाड़ी राजनैतिक आंदोलन में पीछे हैं।

देशी राज्यों के अत्याचारों की प्रदर्शिनी ॥

नागपुर कांग्रेस के अवसर पर कांग्रेस पंडाल के सामने यह प्रदर्शिनी हुई थी, जिस में दिखाया गया था कि आपके देश में आप के भाइयों पर आपके देशी शासकों द्वारा कैसे २ अत्याचार होते हैं? किस तरह अबलाओं की बेइज्ज़ती की जाती है और किस तरह मनुष्यों के हाथों से ऐसे २ निर्दयता-पूर्ण अत्याचार स्त्रियों पर होते हैं, जिन्हें सुन सकना भी मनुष्य के लिये असम्भव है। इसके बारे में 'राजस्थान-केसरी' यों लिखता है:—

प्रदर्शिनी में देख कर आपने इन बातों का कुछ अनुभव किया होगा कि खराबी की जड़ कहां और क्या है ! वहां यह दृश्य आपके सामने आवेंगे कि किस प्रकार नरेश या उमराव के लड़के लड़की की शादी में जो हिसकों को बकरे काट २ कर खिलाने, अतिथियों को शराब पिलाने और रण्डियें नचाने के लिये रुपये न देने पर बड़े २ कारबारियों और अन्य प्रजाजनों एवं किसानों के मुंह पर पाखाने और मिर्चों से भरे हुए घोड़े को दाना खिलाने के तोबरे बांध दिये जाते हैं और वे घंटों हाथ पैर बांध कर इसी अवस्था में धूप में डाल दिये जाते हैं एवं जब तक इच्छित रकम नहीं दे देते इसी तरह सताये जाते हैं। किस तरह बेगार में काम न करने पर लोग जूतों से पीटे जाते हैं। उलटे लटकाये जाते हैं, फिर बैंतों द्वारा उनके सारे शरीर में जखम कर दिये जाते हैं और कभी २ मार तक डाले जाते हैं, किस तरह कुल वधुएँ विलास-लिप्सा की पूर्ति के लिये जबर्दस्ती पकड़वा और उठवा मँगाई जाती है, स्वीकार न करने पर उन्हें कैसी २ यातनाएं दी जाती है, किस तरह उलटी लटकाई जाती हैं उन्हें मिर्चों की धूनी दी जाती है और उनके लहंगों तक में मिर्चें भरदी जाती हैं और इस प्रकार कहना मानने को बाध्य की जाती हैं, किस तरह लोगों के शरीर में मूंज की रस्सी कसकर बांध दी जाती है और फिर उस पर लगातार पानी डालने से वह किस तरह पेंठ कर ग़रीब प्रजा के शरीर को जगह २ से फाड़ डालती है और फिर किस तरह उस निर्दोष मनुष्य-शरीर से रक्त की पिचकारियां छूटकर राक्षसों की राक्षसी प्रवृत्ति की पूर्ति करती हैं ?

बन्धुओ ! धर्म और न्याय की दुहाई देकर नौकरशाही के कृत्यों पर घृणा प्रकट करने और संसार की सहानुभूति पाने के पहिले सोचिये कि क्या आपने कभी इन अत्याचारों पर घृणा प्रकट की है ?

क्या इन अत्याचारों के सहनेवाले भाइयों के और उन किसान भाइयों के, जिनके बल पर सारा देश पलता है, उद्धार के लिये कभी कुछ प्रयत्न किया है ? कभी सहानुभूति दिखाई है, दो आंसू गिराये हैं ? आपकी नाक के नीचे लोगों से कुल पैदावार का आधा तक लगान लिया जाता है और उस पर भी ली जाती हैं सैकड़ों लागतें (अबवाब)! थाने और तहसील नीलाम किये जाते हैं और करोड़ों नरशरीरधारी १३) वार्षिक पर जीवन निर्वाह करने को बाध्य किये जाते हैं। करोड़ों ठण्ड की रातें सिर्फ आग के सहारे काटते हैं और निमोनिया होने पर गाय बैलों की तरह जलते लोहे से दागे जाते हैं। घास के बीजों और छाछ के पानी के सहारे करोड़ों नरशरीर दिन रात परिश्रम करते हैं और यदि कभी सूखा पड़गया तो "हा अन्न हा अन्न" कहते प्राण छोड़ देते हैं । परन्तु उनके मरने का किसी को उतना भी दुःख नहीं होता जितना कीट कृमि का! खुल्लम खुल्ला, ज़बरन गुलाम रक्खे जाते हैं और गुलाम बनाये जाते हैं, सहस्रों नहीं लाखों अपने समान मन इन्द्रियें और बुद्धि रखने वाले मनुष्य और बाध्य किये जाते हैं। सड़े अनाज के घोड़ों के दाने में से छाने हुए दलिये की रोटियें खाकर नीचातिनीच सेवा करने को, रात रात भर पैर दबाने को, उच्छिष्ट खाने और उच्छिष्ट मांजने और जूते साफ करने को उनकी स्त्रियें पुत्रियें बाध्य की जाती हैं, विलासलिप्सा पूर्ण करने को और अस्वीकार करने पर जलादी जाती हैं, उनकी उंगलियें और नोच डालें जाते हैं उनके बाल! मनुष्य, हां हाथ पैर और आंख कान नाक वाले आपके ही सदृश मनुष्य दान में देदिये जाते हैं, दहेज़ में देदिये जाते हैं और बदल लिये जाते हैं दूसरे गुलामों के बदले म ! मा रोती रहती है, बाप बिलखता रहा है और छोटे २ बच्चे बच्चियें देदिये जाते हैं। बड़े २ मनुष्यों के द्वारा किये जाने योग्य कामों में इन्हें

दिनभर पानी खींच कर लाना, कड़ाके की ठंड में बर्तन मांजना, स्वामियों को भोजन कराना, शराब पिलाना, उनके लिये वन-पशुओं की हत्या करना उन्हें चीरना, फाड़ना, काटना और कड़ाके की धूप में बोझा लेकर दौड़ लगाना सीखना पड़ता है। उस समय, जब पलने में खिलाया या शाला में जाना सिखाया जाना चाहिये था, और बात २ पर मार खाना, गालियें खाना, जूते खाना और फिर भी अन्नदाता २ कहना सीख जाते हैं। उसी समय जब उन्हें सम्राट् की टोपी उतार लेने में भी संकोच न होना चाहिये था ! ये सब अमानुषिक कृत्य पैशाचिक अत्याचार होते हैं। आपके सामने, आप के देश में और आप के घर के पिछवाड़े, परन्तु आपने कभी इन अत्याचारों की निन्दा की है ? अत्याचारियों को धिक्कारा है, और अत्याचार पीड़ितों को छाती से लगाया है ? यदि नहीं तो आप दूसरों से सहानुभूति और सहायता पाने की आशा कैसे करते हैं, कैसे विश्वास करते हैं अपने सच्चे देशभक्त और उच्चहृदय होने का। स्मरण रखिये भगवान् की विश्वसंचालिनी शक्ति अपना काम हर हालत में पूरा करती है, केवल यश का तिलक या कलंक का टीका उन मस्तकों पर रह जाता है जो देशोद्धार में वीरता या कायरता दर्शाते हैं।

अजमेर के अधिवेशन के प्रस्ताव ।

राजपूताना मध्यभारतसभा की कार्यकारिणी सभा की बैठक अजमेर में राजपूतानामध्यभारतसभा के दफ्तर मदारदरवाजा में ता० १४ मार्च १९२१ को सायंकाल के ३ बजे हुई। राजपूताना मध्यभारतसभा का हिसाब व रिपोर्ट पर इन्फार्मल बहस हुई। क्योंकि उस रोज़ खिलाफ़त कान्फ्रेंस का कार्य था इस कारण सभा की बैठक पूरेतौर पर न होकर ता० १५ को मुलतबी कर दी गई। ता० १५ को सायंकाल

के ५ बजे स्थान ईदगाह सब्जेक्ट कमेटी के तम्बू में सभा हुई। निम्नलिखित सज्जन उपस्थित थे:—

बी०एस० पथिकजी, शिवविहारीजी तिवारी जयपुर, गणेशनारायणजी सोमाणी जयपुर, अर्जुनलालजी सेठी, स्वामी नृसिंहदेवजी सरस्वती, मणिलालजी कोठारी, कुंवर चांदरण शारदा, रामनारायणजी चौधरी, कन्हैयालालजी कलंत्री, भूरालालजी कथाव्यास आदि।

प्रस्ताव।

१—सभा की रिपोर्ट पढ़ी गई और पास हुई।

२—सभा का हिसाब पढ़ा गया और पास हुआ और यह भी निश्चय हुआ कि जिस किसी सभासद् को किसी रकम के बारे में जांच करना हो वह इस सभा के दफ्तर में जाकर हिसाब की जांच कर सका है।

३—पंडित सदानन्द तिवारी उपदेशक सभा का त्यागपत्र उपस्थित हुआ और स्वीकार हुआ, उन्होंने जो सभा की सेवा की उसका धन्यवाद दिया गया।

दूसरे दिन की कार्यवाही, ता० १६-३-२१.

स्थान—राव गोपालसिंहजी राठ्वर की हवेली।
निम्नलिखित सज्जन उपस्थित थे:—

राव गोपालसिंहजी, शिवविहारीजी तिवारी, कन्हैयालालजी कलंत्री, अर्जुनलालजी सेठी, स्वामी नृसिंहदेवजी सरस्वती, गणेशनारायणजी सोमाणी, ब्रजमोहनलालजी, Principal School of aurths जयपुर, कुँवर चांदकरण शारदा आदि।

आगामी कार्यक्रम का प्रश्न उपस्थित हुआ, सर्वसम्मति से निश्चय हुआ कि राजस्थान में बेगार की प्रथा शीघ्र हटा दी जाय और श्रीमान् सी० आफ० एन्डूज़ को बेगार की जांच करने के लिये निमंत्रित किये जावें। सी० एफ० एंडूज़ के साथ बेगार-डेपुटेशन में राजपूताना मध्यभारतसभा की ओर से कुँवर चाँदकरण शारदा, कांग्रेस की ओर से पं० गौरीशंकर भार्गव तथा राव गोपालसिंहजी व श्रीमान् अर्जुनलालजी सेठी साथ रहें। पहिले डेपुटेशन उदयपुर जावे और वहां से डाक्टर अम्बालालजी, डूगरसिंहजी, वी. एस. पथिकजी मणिलालजी कोठारी, स्वामी नृसिंहदेवजी, ब्रह्मचारी हरीजी साथ रहें। फिर जोधपुर जावे वहां से गणेशनारायणजी सोमाणी, कन्हैयालालजी कलंत्री साथ में रहें। फिर बीकानेर जावे वहां से ब्रजमोहनलालजी, मणिलालजी कोठारी और स्वामी नृसिंहदेवजी साथ रहें। फिर बूंदी में आदित्यहृदयजी, ठा० केसरीसिंहजी और हीरालालजी जालोरी साथ में रहें। फिर कोटा जावे वहां से हीरालालजी जालोरी व ठा० केसरीसिंहजी साथ में रहें। भरतपुर में जगन्नाथदासजी अधिकारी "वैभव" संपादक, साथ रहें। जयपुर में स्वामी हरिदासजी राजवैद्य, ब्रजमोहनलालजी और शिवबिहारीजी तिवारी साथ में रहें। अलवर में दुर्गाप्रसादजी आर्य्यमन्त्री साथ रहें, करोली में कुं० नारायणसिंहजी साथ रहें।

१—डेपुटेशन के खर्चे के लिये निश्चय हुआ कि ८००) रु० मध्यभारतसभा देवे। २००) श्री कन्हैयालालजी कलंत्री के देने का वायदा धन्यवादपूर्वक स्वीकार किया जाय।

२—सेठ जमनालालजी बजाज का त्यागपत्र प्रस्तुत हुआ, सर्व सम्मति से निश्चय हुआ, कि उनको लिखा जावे कि वे पुनः विचार करें।

३—राव गोपालसिंहजी राठूवर व ब्रजमोहनलालजी कार्यकारिणी सभा के सभासद् चुने गये।

४—नियमों का मसोदा बनाने के लिये श्रीमान् ब्रजमोहनलालजी नियत किये गये और श्रीमान् सेठीजी, चाँदकरण शारदा और स्वामी नृसिंहदेवजी उन पर बहस कर कर छपाकर सब सभासदों के पास भेजने के लिये नियुक्त होवें।

उपरोक्त तीनों सभासदों की उपसभा ने नियम बना दिये हैं और वे प्रत्येक सभासद् के पास भेज दिये गये हैं।

बेगार आन्दोलन ॥

राजपूताना मध्यभारतसभा अपने जन्म दिन से ही बेगार की अमानुषिक प्रथा को जड़ से उखाड़ने का प्रयत्न कर रही है। राजस्थान के भिन्न २ विभागों में सभा के सभासदों व सेवासमितियों ने शराब बंद कराई व बेगार के विरुद्ध आन्दोलन में पूर्ण सहायता प्रदान की। यह इस आन्दोलन का फल है कि कुछ रियासतों ने बेगारें बंद करदीं। सभा ने श्रीमान् सी. एफ. एंड्रूज के साथ भ्रमण कर देशी राज्यों में बेगार की प्रथा का दिग्दर्शन कराने का निश्चय किया था और राजस्थान सेवासंघ को भी इसी वास्ते सभा ने २००) रुपये दिये भी थे। परन्तु अभाग्यवश श्रीमान् एंड्रूज़ न पधार सके। इस कारण जो बेगार के बारे में तहक़ीकात की गई थी उसको अब "राजस्थान में बेगार" नामक पुस्तक लिखकर सभा की ओर से हम छपवा रहे हैं। इस का पहिला भाग "मारवाड़ में बेगार" प्रेस में छपरहा है और शीघ्र ही जनता की सेवा में प्रस्तुत किया जायगा। इस के बाद प्रत्येक रियासत की बेगार पर छोटी २ पुस्तकें प्रकाशित की जावेंगी। हमें आशा है कि इन पुस्तकों का प्रचार करना राजस्थानी अपना कर्त्तव्य समझेंगे।

शोक।

सभा ने लोकमान्य तिलक भगवान् की मृत्यु पर शोक प्रकाशित किया और उनके पुत्रों के तथा श्रीमान् केलकरजी के पास सहानुभूति-सूचक पत्र व तार भेजे।

हमारी आवश्यकतायें।

जहां हमें देशभक्त धनी दानी महानुभावों की सहायता की आवश्यका है वहां सब से अधिक हमें योग्य उपदेशकों व कार्यकर्त्ताओं की आवश्यकता है, जो बिलकुल निर्भय हो अपना सर्वस्व देशहितार्थ न्यौछावर करने वाले हों और सभा के उद्देश्यों से पूर्ण सहानुभूति रखने वाले हों।

सभा के अधिवेशन।

इस वर्ष सभा के २ बृहदधिवेशन नागपुर और कलकत्ते में हुए और कार्यकारिणी की बैठक बम्बई, कलकत्ता, नागपुर और अजमेर में हुई, जिसमें बहुतसे सभासदों ने बहुत दिलचस्पी से काम लिया।

सभासदों की सूची॥

१	कुं० गोविन्ददासजी मालवानी हनुमानताल जबलपुर	
२	राजाबहादुर गोविन्दलालजी पीती	बम्बई
३	बा० रामेश्वरदासजी बिडला	,,
४	ला० केदारनाथजी भार्गव	,,
५	सेठ जयनारायणजी तापड़िया	,,
६	सेठ जवाहिरलालजी जैन	सिकन्दराबाद
७	छगनलालजी बुरड़	जैसलमेर

८	सागरमलजी गोपा	जैसलमेर
९	स्वामी जवाहिरगिरजी	,,
१०	केसरीमलजी	,,
११	श्रीकृष्णदासजी जाजू	वर्धा
१२	सेठ नारायणदासजी	बासा
१३	कुं० व्रजवल्लभजी	,,
१४	भँवरलालजी	आरवी
१५	नारायणशाह (वर्मा)	,,
१६	ठाकुरदासजी	,,
१७	कुन्दनलालजी कोठियां	शाहपुरा
१८	सेठ जमनालालजी	बंबई
१९	रामगोपालजी राठी	फलोदी
२०	नेमीचन्दजी	,,
२१	कन्हैयालालजी कलंत्री खरांगणा	(वर्धा)
२२	मदनलालजी सुवर्णकार	नृसिंहगढ
२३	चांदकरण शारदा	अजमेर
२४	ईश्वरदानजी	कांकरोली
२५	कस्तूरचन्दजी (कोठियां)	मेवाड़
२६	धूलिरामजी ,,	,,
२७	रामयशजी गुप्त	बालोतरा
२८	चौथमलजी बियाणी	बंबई
२९	सेठ लक्ष्मणदासजी	,,
३०	रामकिशनजी कलंत्री	खरांगणा
३१	भगवानदासजी	,,
३२	श्रीकृष्णजी ब्राह्मण खरांगणा	(वर्धा)
३३	काशीरामजी ,, ,,	,,
३४	अमरसिंहजी ,,	,,
३५	नथमलजी राठी ,,	,,
३६	केवलचन्दजी सेवग ,,	,,
३७	भींवराजजी राठी ,,	,,

३८	कन्हैयालालजी राठी	खरांगणा	(वर्धा)
३६	श्रीकृष्णदासजी कलंत्री	,,	,,
४०	काल्लूखांजी ठेकेदार		शाहपुरा
४१	बा० रामविलासजी		अजमेर
४२	K. L. Vodik	बाल्लपुर	घानेराव
४३	रामनाथजी गोयका		दरभंगा
४४	सागरमलजी		,,
४५	रामेश्वरलालजी		,,
४६	विश्वेश्वरलालजी		,,
४७	श्यामप्रसादजी पोद्दार		,,
४८	परमानन्दजी		,,
४६	नृसिंहदासजी		रूंगटा
५०	मांगीलालजी कामदार		शाहपुरा
५१	हजारीमलजी		दरभगा
५२	नारायणप्रसादजी		भोपाल
५३	पटेल रामबक्षजी	नयागांव	(नीमच)
५४	पटेल खेमराजजी	हडभतिया	जावद
५५	पं० चतुर्भुजजी भट्ट	अठना	,,
५६	सेठ रामलालजी	,,	,,
५७	गणेशलालजी	,,	,,
५८	ठा० भैरोंसिंहजी	जेतपुर	,,
५६	गोपोवल्लभजी शर्मा		पूना
६०	भागोरथप्रसादजी	अलमेर	(राजकोट
६१	आइदानजो		जैसलमेर
६२	परमसुखदासजी		नागपुर
६३	कुंदनलालजी		,,
६४	तुलसीदासजी		,,
६५	आईदानजी बीभाणी		,,
६६	सेठ नृसिंहदासजी		छपरा
६७	शिवमूर्तिसिंहजी		बीकानेर

६८ रामराजजी जोशी	बाढ़मेर
६९ मिट्ठालालजी व्यास	,,
७० रणछोड़दासजी	,,
७१ रामगलाजी गोहलट	,,
७२ गोपाललालजी कोठियां	बूंदी
७३ केशवलालजी काला	जयपुर
७४ भूगलालजी कथाव्यास	शाहपुरा
७५ घीसूलालजी जाजोदिया	ब्यावर
७६ परशुरामजी अग्रवाल	जोधपुर
७७ नेमीचंदजी	इन्दौर
७८ किशनचंदजी फतेचंदजी	मऊ छावनी
७९ सुखसंपत्तिरायजी भंडारी	,, ,,
८० गोविन्दरामजी सोमाणी	जयपुर
८१ गणेशनारायणजी सोमाणी	,,
८२ नत्थूलालजी अग्रवाल	मऊ छावनी
८३ गोविन्द गोपीनाथजी	,,
८४ जवदमालजी वर्मा	,,
८५ घासालालजी गोयल	,,
८६ जगन्नाथजी पतंड़िया	,,
८७ निहालचंदजी देवीसहायजी	,,
८८ वासुदेवजी बोडेस	,,
८९ रतनलालजी	,,
९० लालजी नाई रावल	इन्दौर
९१ हजारीमलजी शंकरलालजी	,,
९२ हरिशंकरजी	सांभर
९३ शिवबिहारीजी तिवारी	जयपुर
९४ भगवानदासजी अग्रवाल	मऊ छावनी
९५ नथमलजी	आकोला
९६ रामकृष्णजी जाजू	सोल्हापुर
९७ जानकीलालजी	शेखसरिया

९८	मिश्रीलालजी	कानपुर
९९	तनसुखरायजी जालानी	बंबई
१००	जोधरायजी कचोलिया	जैसलमेर
१०१	छगनलालजी	जयपुर
१०२	रामनारायणजी चौधरी	,,
१०३	मुकुन्दरामजी	,,
१०४	सत्यदेवजी	वर्धा
१०५	कालूरामजी	कलकत्ता
१०६	नाथूलालजी अग्रवाल	इन्दौर
१०७	माणिकलाल द्वारिकादासजी	,,
१०८	जमनालालजी सेठी	छावनी मऊ
१०९	गौरीदत्तजी जालान	मुज़फ्फ़रपुर
११०	कुन्दनलालजी नागर मेहता	कोटा
१११	छोटेलालजी वस्तीरामजी	छावनी इन्दौर
११२	राधामोहन गोकुलजी	कलकत्ता
११३	लूणकरणजी लोढ़ा	चांदा (सी. पी.)
११४	K. R. Jain	Bikaner
११५	शंकरलालजी वर्मा	नृसिंहगढ़
११६	गोपीलालजी शर्मा	,,
११७	पं० श्रीरामजी	चूरू
११८	पं० आत्मारामजी व्यास	मऊ छावनी
११९	जेठमलजी मेहता	कलकत्ता
१२०	माणिकलालजी	बिजोलिया
१२१	जीतमलजी धीसा	कलकत्ता
१२२	नृसिंहदेवजी व्यास	,,
१२३	अर्जुनलालजी सेठी	वर्धा
१२४	जगन्नाथ मनीरामजी बुलठाना	(बरार)
१२५	पृथ्वीनाथसिंहजी	,,
१२६	डूंगरसिंहजी मेहता	जैसलमेर
१२७	भीकूलालजी कचोलिया	,,

१२८	मोतीलालजी कोठारी	जैसलमेर
१२९	जगन्नाथजी सावक	,,
१३०	धनराजजी सावक	,,
१३१	अग्यारामजी	,,
१३२	शंकरलालजी	,,
१३३	हरिदासजी	,,
१३४	गोपीकिशनजी	,,
१३५	कल्याणदासजी	,,
१३६	बुलाकीदासजी	,,
१३७	भोलाराम बद्रीलालजी	इन्दौर छावनी
१३८	सिन्धुदेवजी शर्मा	जैसलमेर
१३९	वक्तावरमलजी	खामगांव
१४०	हीरालाल साहिबचंदजी	,,
१४१	नन्दरामजी भूतड़ा	अलीगढ़
१४२	तोतारामजी राठी	अलीगढ़
१४३	सांवतराम पोखरमलजी	अमरावती
१४४	मन्नालाल जमनादासजी	,,
१४५	मूलचन्द गुलराजजी	यावतमाल
१४६	सांगीदत्तजी	जैसलमेर
१४७	भगवानलालजी अग्रवाल	रामपुर
१४८	बालमुकुन्दजी भराणी	इन्दौर
१४९	मनोहरसिंहजी	बनेड़ा
१५०	जीवनराम गनपतरामजी	वर्धा (पुलगांव)
१५१	रंगलालजी	,, ,,
१५२	राधाकिशन कन्हैयालालजी	,, ,,
१५३	राव गोपालसिंहजी	खरवा (अजमेर)
१५४	बृजमोहनलालजी	जयपुर
१५५	हरिदासजी	जयपुर
१५६	कन्हैयालालजी ठाकुरिया	बधाना (नीमच)
१५७	सुखदीनजी कोकास	,, ,,

१५८	माणिकचन्दजी गोयल	बघाना (नीमच
१५९	वृद्धिचन्दजी गोयल	,, ,,
१६०	भैरोंलालजी गेलड़ा	उदयपुर
१६१	वंशीलालजी वकील	,,
१६२	दलपतसिंहजी	देवलिया
१६३	शिवलालजी अग्रवाल	चित्तौड़गढ़
१६४	नन्दरामजी सोनी कोठियां	अजमेर
१६५	रावपालजी शर्मा ,,	,,
१६६	देवलालजी गोधा ,,	,,
१६७	रामनिवासजी अग्रवाल	भीलवाड़ा
१६८	ठा० तख्तसिंहजी कोलुखेड़ी	सोलंकीवाड़ा
१६९	हजारीमलजी बेरोलिया	दरभंगा
१७०	भारतसिंहजी	सोलंकीवाड़ा
१७१	कर्णसिंहजी जागीरदार	,,
१७२	ठा० चैनसिंहजी	,,
१७३	ठा० ईश्वरदानजी आसिया	मोई
१७४	लालसिंहजी गोहरवार	भोजुवार
१७५	सुखदेवप्रसादजी तिवारी	सोहागपुर
१७६	मूलचन्दजी गुप्त	छावनी नीमच
१७७	नृसिंहदेवजी सरस्वती	अजमेर
१७८	नारायणप्रसादजी भार्गव	खुजनेर
१७९	कृष्णवंशसिंहजी	गोबिन्दगढ़
१८०	रणछोड़दासजी	बारमेर
१८१	रामप्रतापजी	,,
१८२	मिट्ठालालजी गोपालदासजी	,,
१८३	रामराजजी जोशी	,,
१८४	शिवमूर्तिसिंहजी विशाद	बीकानेर
१८५	वंशीलालजी शर्मा	फतहपुर
१८६	सज्जनसिंहजी	मथुरा
१८७	भागीरथप्रसादजी	कोटा

१८८	इन्द्रदत्तजी शर्मा	गोबिन्दगढ
१८९	भानूसिंहजी	भरतपुर
१९०	भादरमलजी जानकीलालजी	,,
१९१	जयगोविन्द गोपीनाथजी	मऊ छावन
१९२	वासुदेवजी दामोदरजी	,, ,,
१९३	नथमलजी लखोटिया	,,
१९४	मिश्रीलालजी सखलेचा	कानपुर
१९५	रतनलालजी कासलीवाल	मऊ छावर्न
१९६	नाथूलालजी छाजूलालजी	,, ,,
१९७	देवीसहायजी लालचन्दजी	उधावना
१९८	जेयदयालजी	मऊ छावर्न
१९९	भगवानदासजी अग्रवाल	,, ,,
२००	हरीकृष्णजी	सांभर
२०१	लालजी भाईरावलजी	इन्दौर
२०२	हजारीमलजी	,,
२०३	परशुरामजी अग्रवाल	जोधपुर
२०४	केसरीलालजी	जयपुर
१०५	शिवकिशनजी आमचन्दजी	मऊ छावर्न
२०६	घीसालालजी जगदेवजी	ब्यावर
२०७	गणेशनारायणजी सोमाणी	जयपुर
२०८	आदित्यहृदयजी मार्तण्ड	बूंदी
२०९	रामकृष्णजी जाजू	सोलापुर
२१०	सत्यदेवजी.	दिल्ली
२११	नाथूलालजी अग्रवाल	इन्दौर
२१२	तेजसुखरावजी	बंबई

परिशिष्ट नं० १.

देशके नेताओं व प्रसिद्ध २ नरेशों के पत्र जो सभा के आफिस में आये।

1, DARYAGANJA,
Delhi.

DEAR SIR,

Received your letter date—*Nil*, asking me to participate in your exertions for ~~all wishing~~ alleviating the grievances of the Indians under Ruling Princes. You have asked me to join your deputation also. But I am sorry I can not comply with your wishes, the chief cause you know yourself, *i.e.* I am one of the the office-holders of the I. N. Congress.

Personally I have every sympathy with you all and pray for your success. As for taking any practical step, I will have to obey the orders of the Congress authorities. You may do your best and let us see what comes out. We are now-a-days awfully busy with the local affairs, I mean, hostal, &c., in connection with the ensuing visit of H. R. M. the Duke. The second week of February will be devoted towards the organization of the A. I. Tibbia and Aurvedic Conference and opening of the Tebbia College.

Hope to see you in the said Conferance.

Yours sincerely,
M. A. ANSARI.

Office of the All-India Congress Committee.

Telegrams:—" CONGRESS"

No. 665.

The 6th November, 1921.

My Dear Mr. Sarda,

This is just to write to you that as you suggested in a letter addressed to me some time ago the revised constitution of the Congress as drafted by the Sub-Committee has proposed to include subjects of Indian States in the electorates of the Congress.

I hope you will be present at the next meeting of the All-India Congress Committee when it will consider the changes to be introduces in the Congress constitution.

Yours sincerely,

V. G. PATEL,

Joint General Secretary.

THE ARAMA,

SALEM (S. INDIA),

November 3rd 1920.

Dear Sir,

I received to-day your letter of the 26th October last. Thank you for it. The question you raise is a very important one as well as a very delicate one. I

shall certainly coöperate with Congress men, who are anxious to see that the whole country including the Native States enters on the path of Political and economic freedom.

I dare say that you will attend the Nagpur Congress.

Yours sincerely,
C. VIJIARAGHAVACHARIAR,
(President Indian National Congress, Nagpur.)

Office of the All-Indian Congress Committee.

Telegram—"CONGRESS".
LUCKNOW,
5, Neil Road, Lucknow,
The 18th November 1920.

DEAR MR. SARDA,

Many thanks for your letter of the 4th instant. I agree with you in that the Indian Statesare an integral part of the Political and Economic life of our country and the Indian National Congress will truly be national only when it embraces within its fold the Indian States as well as British India.

It is not that I have omitted Ajmer-Merwara and British Rajputana from the scheme which has recently been issued for public criticism, as you will see that Article 6 of the Draft constitution includes Ajmer-Merwara and British Rajputana in Province No. 8, along with Delhi. It is therefore due to an inadver-

tent step that Ajmer-Merwara and British Rajputana has been omitted in Article No. 2. So you need not be anxious on that matter.

Before closing, I would just like to mention that I find from the records of this office your previous letters to Pandit Gokarannath Misra having been duly attended to.

Yours sincerely,

V. I. PATEL,

Joint General Secretary.

JAIPUR PALACE RAJPUTANA,

25th January 1921.

THE GENERAL SECRETARY,

INDIAN STATE CONFERENCE.

Ajmer.

DEAR SIR,

With reference to your letter No. 71 dated the 24th January 1921, regarding the deputation of the All-India Indian States Subjects Conference. I have to inform you that His Highness the Maharaja Sahib Bahadur is in indifferent health, it will not be possible for His Highness to receive the deputation. His Highness the Maharaja will not, owing to ill-health be able

to go to Delhi on the occassion of His Royal Highness the Duke of Connought's visit.

Yours faithfully,
S. C. WAJANDER,
Dy. Private Secretary.
to
H. H. Maharaja of Jaipur.

No. 6308.

From

THE PRIVAE SECRETARY,
TO CAPTAIN HIS HIGHNESS,
MAHARAJA NARENDRA SHAH BAHADUR,
Tehri-Garhwal State.

To

THE GENERAL SECRETARY,
Indian State Conference, Ajmer,
Dated Tehri the 1st February 1921.

DEAR SIR,

With reference to your Circular letter, No 57 dated 27th instant, I have the honour to say that we have no information as to who has started the Conference and whether it is patronized by the Government and what its rules are. On receipt of those informations I shall let you know our decision.

Yours truly,
J. DULDY,
Private Secretary.

....

No. 2060—E of 1917

From

The Chief Secretary to the Sirmoor Darbar.

To

THE GENERAL SECRETARY.

Indian States Subjects Conference,

Ajmer.

Dated Kahan the 5th February 1921.

Dear Sir,

In reply to your letter No. 54, dated 24-1-21. I have the honour to say under dircetions that His Highness the Maharaja shall be pleased to receive your deputation at Delhi during the Royal visit.

Yours faithfully,

PRABHUDIAL,

For *Chief Secretary, Sirmoor Darbar.*

No. 208.

BARODA,

29th January, 1921.

Dear Sir,

With reference to your letter No. 16 dated the 27th instant requesting for an interview with His Highness the Maharaja Gaekwar in connection with explaining to His Highness, the grievances of the subjects of the Indian States, I regret to inform you

that His Highness the Maharaja Sahib is not going to Delhi and that therefore, no interview can be arranged as requested.

Yours faithfully,
K. M. GUPTA,
Assistant Secretary.

To

CHANDKARAN SARDA, ESQ.,
GENERAL SECRETARY,
Indian State Ccuference, Ajmer.

No. 10 of 1921.

AJAIGARH, C.I.
The 7th February, 1921.

Dear Sir,

I acknowledge your letter No. 8, dated 24th January 1921.

I regret to state that owing to ill-health His Highness is unable to arrange to receive the deputation. Meanwhile I shall be thankful if you can forward a copy of the note embodying the points which the diputation proposes to urge.

Yours faithfully,
E. MURRAY,
Private Secretary to His Highness,
Maharaja Sahib Bahadur of Ajaigarh.

To

BABU CHANDKARAN SARDA,
GENERAL SECRETARY,
Indian States Conference, Ajmer.

RAMPUR STATE,
The 4th February 1921.

Dear Sir,

In reply to your No. 2-B. dated 24th January 1921, addressed to the Private Secretary to His Highness the Nawab of Rampur I am directed to say that His Highness the Nawab is not prepared to receive the deputation which your Conference has proposed to send round to the Indian States.

Yours faithfully,
OAMAR KHAN,
Chief Secretary.

To

CHANDKARAN SARDA SAHIB,
GENERAL SECRETARY,
Indian State Conference, Ajmer.

No. 322—1921.

From

THE PRIVATE SECRETARY,
Lieut.-Colonel His Highness the Maharaja Dhiraj Shri Swai Maharaj Veerandra Shiromanideo of Alwar.

To

THE GENERAL SECRETARY,
Indian States Conference, Ajmer.

Alwar, dated the 22nd February 1921.

Dear Sir,

You asked in your letter of 24th January last that your deputation may be received by His Highness during his recent visit to Delhi, but you gave no address at Delhi where the letter could have been answered.

Under the circumstances you will realise that it was not possible to give you any interview.

Yours faithfully,
Illigible,
B.A. L.L.B., (Cantab).
Private Secretary.

Office of the All-India Congress Committee.

Telegram-"CONGRESS."
Allahabad.

Anand Bhavan, Allahabad,
The 11th February 1921.

No. 69.

Dear Sir,

I am sorry I am not in favour of any deputations whether they are to wait on British or Indian Princes and can not join you as requested. The Congress has certainly not identified itself with such a procedure and I would be putting it in a false position by taking part as its General Secretary.

Yours sincerely,
MOTI LAL NEHRU,
General Secretary.

CHAND KARAN SARDA, Esq.,
SECRETARY,
All India Native States Conference, Ajmer.

No. 48 21.

JHALRAPATAN,

RAJPUTANA.

25th February 1921.

Dear Sir,

Your letter No. 17 of the 24th January arrived while His Highness had not returned from England and he has to go direct to Delhi for the inauguration of the "Chamber of Princes," your letter came to my notice only after His Highness return from Delhi, I am therefore sorry a timely action could not be taken on it.

Yours faithfully,

Illigible,

Private Secretary to His Highness,
the Maharaja Rana Bahadur of
Jhalawar.

To

CHAND KARAN SARDA,
GENERAL SECRETARY,
Indian State Conference,
Ajmer.

Pandit Moti Lal Nehru said as follows regarding the Indian States in his recent address as President of the Rajputana Central India Ajmer-Merwara Political Conference :—Let me take this opportunity of assuring all Indian Ruling Chiefs that there is no reason for them to be a alarmed at the Non-Co-operation movement, which is directed against the British Government only,

and not against them. I can not too strongly impress upon those delegates who come from those States that the true happiness of both the rulers and the ruled lies in a hearty Co-operation between them, and that nothing can lead to more disastrous results than the application of our programme of Non-Co-operation to the Indian States. All that we Non-Co-operationists desire is that our Indian Chiefs should rule and treat their subjects as brothers and respond with sympathy and encouragements to their legitimate aspirations.

H. R. H. the Duke of Connought said as follows in his speech on 8th February while opening the Chamber of princes:—

"Whose (emperor's) desire it is that every breath of suspicion or misunderstanding should be dissipated and who now invites your Highnesses in the fulness of His confidence to take a larger share in the political development of your motherland."

"Your Highnesses, I have witnessed many changes in my life time. March of old order as I know in my youth has passed away for ever. For all classes, the past 50 years have been an era of change and the princes of the great Indian States furnish no exception to the general rule. Their condition of life have been profoundly modified. They have emerged from the seclusion that so long hedged them round and they aspire and rightly to play a part in the wider theatre of modern life. I am sure that the part will be a worthy one. I rejoice to think that by my share in to-day's

ceremony I am doing something to promote your wishes and to provide a larger sphere for your public spirited activities. Increased opportunities, as I need not remind Your Highness bring in their train increased responsibilities. I know well that your Highness will appreciate the trust reposed in you by His Imperial Majesty and his Government will worthily respond both as pillars of the empire and as rulers striving ever for the greater happiness and prosperity of your own subjects.

His Excellency Lord Reading Viceroy of India speaking on state reforms at Srinagar on the 27th October 1921 remarked as follows:—

Your Highness has also alluded to your recent inauguration of an executive council to assist you in administration of the state and with instructions to devote themselves as one of their first duties to the framing of a scheme for a reprensentative assembly. A High court with 3 judges is also about to be brought into being. These measures will, I am sure, have the effect of improving the administrative and judicial machinery of the state and will have the advantage of associating the various communities of Jammu and Kashmir with the working of the state machine. I trust the great decentralization in work will afford a welcome relief to your Highness and conduce to the greater welfare and contentment of your people. It is the poor who always stand most in need of the care of third Ruler and your Highness has shown that you have their well being uppermost in your mind.

दानदाताओं की सूची ॥

१०००)	रामेश्वरदासजी बिडला	बंबई
१०००)	रायबहादुर सेठ जमनालालजी बजाज	बंबई
५००)	रायबहादुर गोविन्दलालजी पीती	बंबई
५००)	सेठ जयनारायणजी तापड़िया	बंबई
२००)	लाला केदारनाथजी राधामोहनजी	बंबई
१०१)	रामविलासजी शारदा	अजमेर
१००)	चौथमलजी बियानी शेयर बाज़ार	बंबई
१००)	सेठ लक्ष्मणदासजी डागा	बंबई
५०)	गौरीदासजी धनराजजी (अगरचंद घेवरचंद	अजमेर)
१०)	रावराजा तेजसिंहजी	जोधपुर
६)	कुंवर गोविन्ददासजी	जबलपुर
५)	रामयशजी गुप्त	बालोतरा
५)	केसरीलालजी काला	जयपुर
५)	रावसाहिब गोपालसिंहजी	खरवा

हिसाब आयव्यय, राजपूताना मध्यभारतसभा अजमेर का, ता० ६ मार्च सन् १९२१ से ता० ३० सितम्बर सन् १९२१ तक.

हिसाब आय।

१४७३।)	सभा के कोष में पिछला शेष
१३७)	आमदनी ता० ६-३-२१ से ता० ३०-९-२१ तक
१)	ता० १४-३-२१
४)	ता० १५-३-२१.
१८)	ता० १६-३-२१.
३)	ता० १७-३-२१.
१०)	ता० ११-४-२१.
५०)	ता० १२-४-२१.
१)	ता० ३-८-२१.
५०)	ता० ४-८-२१.
१३७)	
१६१०)	

हिसाब व्यय।

४८८॥=)॥	व्यय ता० ६-३-२१ से ता० ३०-९-२१ तक.
१८।)	पत्रव्यय
१०=)	तारव्यय
३६)	चपरासी वेतन
७९=)	क्लर्क वेतन
१०॥)॥	स्टेशनरी
३॥)	तेल रोशनी
१४॥=)॥	समाचार-पत्रव्यय
६)	अतिथिसत्कार
≠)॥	फुटकर व्यय
३०)	उपदेशक वेतन
२००)	राजस्थान सेवा-संघ को
७९॥)	?ाई
४८८॥=)॥	
११२१॥)।	सभा के कोष में शेष रहे ता० १-१०-२१ को.
१६१०)	